पढ़े चलो, बढ़े चलो
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान

लोक शिक्षण संचालनालय, ...
द्वारा वर्ष 2023 के लिए जारी प्रश्न बैंक

GPH®

प्रश्न बैंक

(रेमेडियल माड्यूल के प्रश्न-उत्तर सहित)

MP BOARD OFFICIAL

उत्तर सहित

हिन्दी

कक्षा 11

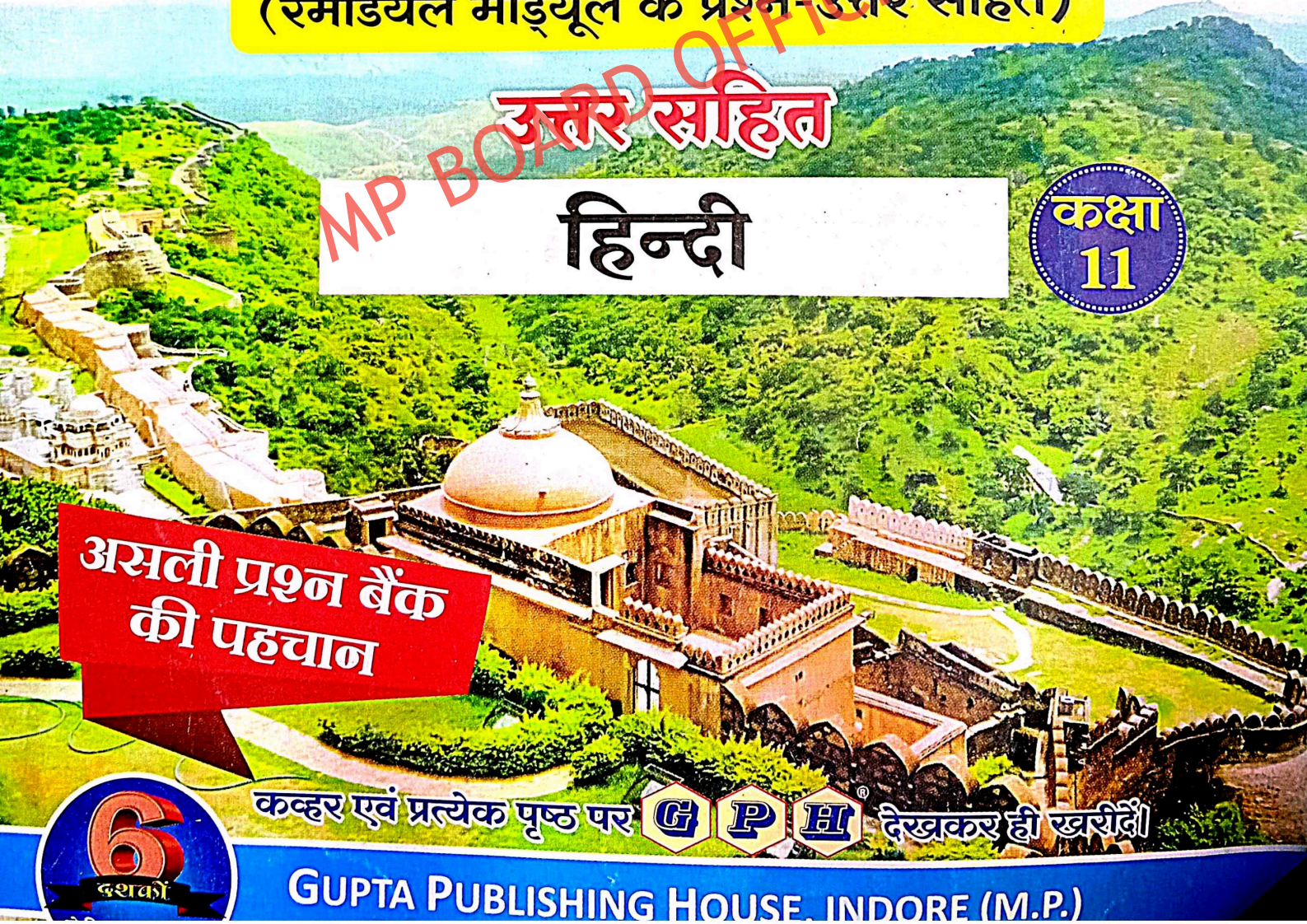

असली प्रश्न बैंक की पहचान

कव्हर एवं प्रत्येक पृष्ठ पर GPH® देखकर ही खरीदें।

6 दशकों

GUPTA PUBLISHING HOUSE, INDORE (M.P.)

Aamir Khan

लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल द्वारा जारी, प्रश्न बैंक उत्तर सहित

जी पी एच® प्रश्न बैंक

हिन्दी : कक्षा-11वीं

समय : 3 घण्टे] **प्रश्न-पत्र ब्लूप्रिन्ट (Blue Print of Question Paper)** [पूर्णांक : 80

क्र.	इकाई एवं विषय वस्तु	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न 1 अंक	अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल प्रश्न
				2 अंक	3 अंक	4 अंक	5 अंक	
1.	**आरोह भाग-1, काव्य खण्ड** ● पद्य साहित्य का इतिहास एवं प्रवृत्तियाँ ● कवि परिचय ● **भावार्थ:** (सन्दर्भ, प्रसंग, भावार्थ, काव्य सौन्दर्य) ● सौन्दर्य बोध, भाव एवं विषय वस्तु आधारित प्रश्न।	17	06	02	01	01	–	04
2.	**काव्य बोध:** ● काव्य के भेद (प्रबन्ध एवं मुक्तक काव्य के भेद एवं उदाहरण) ● **रस :** परिचय (परिभाषा, अंग, प्रकार एवं उदाहरण). ● **अलंकार :** परिचय एवं प्रकार (वक्रोक्ति, दृष्टान्त, उदाहरण एवं विशेषोक्ति अलंकार) ● **छंद :** परिचय एवं प्रकार (रोला एवं मुक्त छंद) ● गजल ● **शब्द शक्ति :** परिचय एवं प्रकार ● **शब्द-गुण :** परिचय एवं प्रकार ● बिम्ब विधान।	09	05	02	–	–	–	02
3	**आरोह भाग-1 : गद्य खण्ड** ● गद्य साहित्य का इतिहास, विकासक्रम, प्रवृत्तियाँ एवं गद्य की विधाएँ (कहानी, संस्मरण, व्यंग्यात्मक निबंध, एकांकी) ● लेखक परिचय ● व्याख्या (सन्दर्भ, प्रसंग, व्याख्या, विशेष) ● विषयवस्तु एवं विचार बोध पर आधारित प्रश्न।	17	06	02	01	01	–	04
4	**भाषा बोध** ● शब्द (क्षेत्रीय, तकनीकी एवं निपात शब्द) ● शब्द युग्म एवं उनके प्रकार ● वाक्य परिचय एवं प्रकार (अर्थ एवं रचना के आधार पर) ● वाक्य शुद्धिकरण एवं वाक्य परिवर्तन ● मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ ● राजभाषा, राष्ट्रभाषा ● भाव पल्लवन, सार संक्षेपण, विज्ञापन लेखन, संवाद लेखन एवं अनुच्छेद लेखन।	12	05	02	01	–	–	03
5	**वितान भाग-1** पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न।	07	05	01	–	–	–	01
6	**अभिव्यक्ति और माध्यम :** पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न।	07	05	01	–	–	–	01
7	**अपंठित बोध-** (गद्यांश/काव्यांश) पर आधारित प्रश्न।	03	–	–	01	–	–	01
8	**पत्र लेखन-** औपचारिक/अनौपचारिक संबंधित पत्र लेखन।	04	–	–	–	01	–	01
9	**निबन्ध लेखन-** (रूपरेखा सहित)	04	–	–	–	01	–	01
	कुल	**80**	**32**	**20**	**12**	**16**	**-**	**18+5=23**

प्रश्न पत्र निर्माण हेतु विशेष निर्देश-

□ 40% वस्तुनिष्ठ प्रश्न, 40% विषयपरक प्रश्न, 20% विश्लेषणात्मक प्रश्न होंगे।

1. प्रश्न क्रमांक— 01 से 05 तक 32 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। सही विकल्प 06 अंक, रिक्त स्थान 07 अंक, सही जोड़ी 06 अंक, एक वाक्य में उत्तर, 07 अंक, सत्य/असत्य 06 अंक, संबंधी प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न पर 01 अंक निर्धारित है। 2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों में आंतरिक विकल्प का प्रावधान होगा। यह विकल्प समान इकाई/उप इकाई से तथा समान कठिनाई स्तर वाले होंगे। इन प्रश्नों की उत्तर सीमा निम्नानुसार होगी- □ अति लघु उत्तरीय प्रश्न 02 अंक लगभग 30 शब्द। □ लघु उत्तरीय प्रश्न 03 अंक लगभग 75 शब्द। □ विश्लेषणात्मक 04 अंक लगभग 120 शब्द। 3. **कठिनाई स्तर :** 40% सरल प्रश्न, 45% सामान्य प्रश्न, 15% कठिन प्रश्न।

MP BOARD OFFICIAL

7/10 08:23

हिन्दी : कक्षा-11वीं

[पाठ्यक्रम में से हटाई गई विषय वस्तु]

आरोह भाग-1	काव्य खण्ड	• कबीर (पद-2) संतो देखत जग बौराना • मीरा (पद-2) पग घुँघरू बांधि मीरा नाची • रामनरेश त्रिपाठी- पथिक (पूरा पाठ) • सुमित्रानंदन पंत- वे आँखे (पूरा पाठ)
	गद्य खण्ड	• कृष्णनाथ-स्पीति में बारिश (पूरा पाठ) • सैयद हैदर रजा- आत्मा का ताप (पूरा पाठ)

इकाई- 1. आरोह भाग- 1

काव्य खण्ड

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1. कबीर ने ईश्वर के कितने रूप माने हैं-
(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) अनंत

2. मीराबाई के आराध्य देव कौन थे?
(अ) श्री राम (ब) श्री शिव
(स) श्री राधा (द) श्री कृष्ण

3. मीराबाई की भक्ति है-
(अ) दास्य भाव की (ब) साख्य भाव की
(स) दांपत्य भाव की है (द) उपर्युक्त सभी

4. मीराबाई ने कौन-सी बेलि बोयी है-
(अ) दया की (ब) प्रेम की
(स) भक्ति की (द) माया की

5. मीरा ने श्रीकृष्ण को किस रूप में स्वीकार किया है?
(अ) ईश्वर के रूप में (ब) पति के रूप में
(स) आराध्य के रूप में (द) सखा के रूप में

6. त्रिलोचन लिखित कविता में लड़की का नाम है-
(अ) चमेली (ब) चंपा (स) निर्मला (द) महादेवी

7. चंपा लड़की है-
(अ) त्रिलोचन की (ब) गांधी बाबा की
(स) सुंदर की (द) बालम की

8. चिरागा किसके लिए तय थे-
(अ) शहर के लिए (ब) देश के लिए
(स) हर एक घर के लिए (द) जनता के लिए

9. [illegible] किसे मयस्सर नहीं है-
(अ) [illegible] को (ब) देश को
(स) हर घर को (द) जनता को

10. चंद मलिकार्जुन का अर्थ है-
(अ) शिव (ब) ब्रह्मा (स) विष्णु (द) पुराण

11. अक्कमहादेवी किस भाषा की कवयित्री है-
(अ) संस्कृत (ब) कन्नड़ (स) हिंदी (द) तमिल

12. सबसे खतरनाक कौन-सी दिशा है-
(अ) जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
(ब) उत्तर (स) दक्षिण (द) पूरब

13. निम्न में से सबसे खतरनाक है-
(अ) पुलिस की मार (ब) मेहनत की लूट
(स) सपनों का मर जाना (द) गद्दारी लोग की

14. मुट्ठी कविता में किसे बचाने की बात की गई है-
(अ) शहरों को (ब) बस्तियों को
(स) लहरों को (द) देश को

15. कवयित्री बच्चों के लिए बचाना चाहती हैं-
(अ) आँगन (ब) स्कूल (स) घर (द) मैदान

16. संथाली आदिवासियों का हथियार नहीं है-
(अ) कुल्हाड़ी (ब) धनुष (स) तीर (द) पिस्तौल

17. कवयित्री विश्वास से भरे इस दौर में क्या बचाना चाहती है-
(अ) विश्वास (ब) उम्मीद (स) सपने (द) उपर्युक्त सभी

18. हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहलाता हैं।
(अ) आदिकाल (ब) भक्तिकाल
(स) रीतिकाल (द) आधुनिककाल

19. 'हिन्दी पद्य साहित्य को कितने कालो में बाँटा गया हैं?
(अ) चार (ब) पाँच (स) छः (द) आठ

20. प्रयोगवाद का समय हैं।
(अ) सन् 1900 से सन् 1920
(ब) सन् 1920 से सन् 1936
(स) सन् 1936 से सन् 1943
(द) सन् 1943 से सन् 1950

MP BOARD OFFICIAL

21. रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं।
(अ) मलिक मुहम्मद जायसी (ब) भारतेंदु
(स) तुलसीदास (द) कबीरदास

22. 'श्रंगार काल' किस काल को कहा जाता है-
(अ) आदिकाल (ब) भक्तिकाल
(स) रीतिकाल (द) आधुनिक काल

उत्तर- (1) (अ), (2) (द), (3) (स), (4) (ब), (5) (ब), (6) (ब), (7) (ब), (8) (स), (9) (अ), (10) (अ), (11) (ब), (12) (अ), (13) (अ), (14) (ब), (15) (अ), (16) (अ), (17) (द), (18) (ब), (19) (अ), (20) (द), (21) (स), (22) (स)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों में सही शब्द चुनकर लिखिए-

(1) वाणी का डिक्टेटर ..... को कहा जाता है। (मीराबाई/कबीर)
(2) कबीर भक्ति काल की ..... काव्य धारा के कवि हैं। (सगुण/निर्गुण)
(3) मीरा की भाषा ..... है। (बुंदेली/राजस्थानी)
(4) मीरा ने प्रेम बेलि में ..... सींचा है। (आँसुओं का जल/गंगाजल)
(5) कवि के पिता को ..... व्याप्त नहीं हुआ। (दुख/बुढ़ापा)
(6) घर की याद कविता ..... ऋतु में लिखी गई है। (वर्षा/ग्रीष्म)
(7) चंपा ..... नहीं चीन्हती। (पुस्तकें/काले अक्षर)
(8) चंपा ..... करती है। (चरवाही का काम/मजदूरी)
(9) कवि ..... से पेट ढकने की बात करता है। (हाथों से/पैरों से)
(10) दुष्यंत कुमार के अनुसार ..... में धूप लगती है। (भष्टाचार का अड्दा/ दरख्तों के साए में)
(11) हे भूख मत .....! (मचुल/सता)
(12) अक्क का अर्थ ..... होता है। (बहन/माता)
(13) मरसिया का अर्थ ..... होता है। (लोकगीत/शोक गीत)
(14) तड़प का न ..... होना होता है। (खतरनाक/सबसे खतरनाक)
(15) कवयित्री नाचने के लिए ..... बचाना चाहती है। (आँगन/मैदान)
(16) बस्तियों को ..... बचाने की बात की गई है। (प्रदूषण से/शहर के आवो हवा से)
(17) जयशंकर प्रसाद ..... कवि है। (छायावादी/प्रयोगवादी)
(18) निर्गुण काव्यधारा के प्रमुख कवि ..... हैं। (जापसी/कबीर)
(19) रीतिकाल का प्रमुख रस ..... है। (श्रंगार/वीर)
(20) संवत 1950 के बाद की कविता को ..... कहा जाता है। (नई कविता/छायावादी कविता)
(21) छायावाद के प्रमुख स्तंभ ..... है। (चार/पाँच)

उत्तर- (1) कबीर, (2) निर्गुण, (3) राजस्थानी, (4) आँसुओं का जल, (5) बुढ़ापा, (6) वर्षा, (7) पुस्तकें, (8) चरवाही का काम, (9) हाथों से, (10) दरख्तों के साए में, (11) मचल, (12) बहन, (13) शोक गीत, (14) खतरनाक, (15) आँगन, (16) शहर के आवो हवा से, (17) छायावादी, (18) कबीर, (19) श्रृंगार, (20) नई कविता, (21) चार।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाकर लिखिए-

(1)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) हम तौ एक करि जांना	(अ) अत्यधिक खुशी 3
(2) मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई	(ब) चंपा
(3) परिताप	(स) कबीर 1
(4) सोने पर सुहागा	(द) मीराबाई 2
(5) मुतमइन	(इ) आश्वस्त 5
	(फ) भवानी प्रसाद मिश्र 4

उत्तर-(1) (स), (2) (द), (3) (फ), (4) (अ), (5) (इ)।

(2)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) चंपा काले अक्षर नहीं चीन्हती	(अ) अक्कमहादेवी 3
(2) कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए	(ब) पाश 4
(3) हे भूख मत मचल	(स) दुष्यंत कुमार 2
(4) सबसे खतरनाक	(द) त्रिलोचन 1
(5) आओ मिलकर बचाएँ	(इ) भवानी प्रसाद मिश्र
	(इ) निर्मला पुतुल 5

उत्तर- (1) (द), (2) (स), (3) (अ), (4) (ब), (5) (फ)।

(3)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) निरभै भया कछू नहिं ब्यापै	(अ) भवानी प्रसाद मिश्र 2
(2) कविता का गांधी	(ब) चंपा काले लक्षण नहीं चीन्हती
(3) प्राण मन घिरता रहा है	(स) अक्कमहादेवी 5
(4) कलकाते पर नजर गिरे	(द) कबीर 1
(5) हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर	(इ) घर की याद 3

उत्तर- (1) (द), (2) (अ), (3) (इ), (4) (ब), (5) (स)।

MP BOARD OFFICIAL

2022/11/10

(4)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) मीरा के प्रभु	(अ) परिवार की मर्यादा
(2) रतनाकर ने निर्मित कर दी	(ब) आदिवासियों की दिलचस्पी के प्रतीक
(3) कुल की कानि	(स) गिरधर नागर
(4) धनुष तीर और कुल्हाड़ी	(द) स्वर्ण सड़क

उत्तर- (1) (स), (2) (द), (3) (अ), (4) (ब)।

(5)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) हिंदी कविता का जागरण काल	(अ) सूरदास
(2) कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि	(ब) वीरगाथा काल
(3) द्विवेदी युग के प्रवर्तक	(स) प्रयोगवाद
(4) आदिकाल का अन्य नाम	(द) जयशंकर प्रसाद
(5) तार सप्तक	(इ) महावरी प्रसाद द्विवेदी
	(फ) भारतेंदु युग

उत्तर- (1) (द), (2) (अ), (3) (इ), (4) (ब), (5) (स)।

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर लिखिए-

(1) मानव शरीर का निर्माण किन पंचतत्व से हुआ है?
(2) जगत क्या देखकर मोहित हो रहा है?
(3) कवि पाँचवा (अभागा) किसे कहते हैं?
(4) कवि किसमें व्यस्त है?
(5) चंपा क्या छुपा लेती है?
(6) चंपा कवि से क्या कहती है?
(7) कवि दुष्यंत कुमार किस बात के लिए बेकरार है?
(8) चिरागा का किस प्राप्त का प्रतीक है?
(9) अक्कमहादेवी किससे अपने पाश ढीलने के लिए कहती है?
(10) अक्कमहादेवी ईश्वर को क्या कहकर संबोधित करती है?
(11) सबसे खतरनाक कौन-सा गीत होता है?
(12) कौन-सी दिशा सबसे खतरनाक होती है?
(13) कवयित्री पूरी बस्ती को किस में डूबने से बचाना चाहती है?
(14) कवयित्री रोने के लिए क्या बचाना चाहती है?

उत्तर- (1) तत्व- हवा, अग्नि, जल, आकाश, मिट्टी, (2) माया, (3) स्वयं को, (4) कविता में, (5) कलम व कागज, (6) कोलकाता पर वज्रगिरे, (7) आवाज में असर, (8) सुख सुविधाएँ, (9) शिव को, (10) चन्नमल्लिकार्जुन, (11) प्रतिकार के भाव को समाप्त करता है।, (12) जिस पर चलकर मनुष्य अपनी आत्मा की आवाज को अनसूनी कर देता है।, (13) आबो हवा से, (14) थोड़ा सा विश्वास, उम्मीद व सपने।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग कबीर ने किया।
(2) कबीर ने ईश्वर को एक ही माना है।
(3) कवि भवानी प्रसाद मिश्र की माता बहुत पढ़ी लिखी
(4) कवि भवानी प्रसाद मिश्र दो सौ साठ'' दंड लगाते
(5) चंपा का पिता मिस्त्री है।
(6) चंपा चंचल और नटखट है।
(7) दुष्यंत कुमार अपने बगीचे में गुलमोहर के तले
चाहते हैं।
(8) आज हर घर और शहर के लिए चिराग मयस्सर है।
(9) अक्कमहादेवी शैव परंपरा की कवयित्री है।
(10) अक्कमहादेवी स्वयं का घर पूरी तरह भूल जाना चाहती
(11) पाश पंजाबी साहित्य के कवि हैं।
(12) बैठे-बिठाए पकड़े जाना सबसे खतरनाक है।
(13) निर्मला पुतुल का जन्म आदिवासी परिवार में हुआ।
(14) इस दौर में हमारे पास बचाने को कुछ नहीं बचा है
(15) छायावादी कवियों के प्रकृति का मानवीकरण किया
(16) शोषकों के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति करु
प्रगतिवाद है।
(17) तार सप्तक में 70 कवि सम्मिलित थे।
(18) मीराबाई भक्तिकाल की कवयित्री थी।

उत्तर- (1) सत्य, (2) सत्य, (3) असत्य, (4) असत्
(5) असत्य, (6) सत्य, (7) सत्य, (8) असत्य, (9) सत्
(10) सत्य, (11) सत्य, (12) असत्य, (13) सत्य, (14
सत्य, (15) सत्य, (16) सत्य, (17) असत्य, (18) सत्

लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन उन्होंने क्या तर्क दिए है।

उत्तर- कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। उन्होंने इसके समर्थ में निम्नलिखित तर्क दिए हैं-
(1) संसार में सब जगह एक पवन व एक ही जल है।
(2) सभी में एक ही ज्योति समाई है।
(3) एक ही मिट्टी से सभी बर्तन बने हैं।
(4) सभी प्राणियों में एक ही ईश्वर विद्यमान है, भले ही प्राणी का रूप कोई भी हो।
(5) मूर्ख व्यक्ति ही ईश्वर के भिन्न रूपों का कथन करता है।

प्रश्न 2. कबीर ने अपने को दीवाना क्यों कहा है।

उत्तर- यहाँ 'दीवाना' का अर्थ है- पागल। किसी के प्रेम में डूबा हुआ व्यक्ति दीवाना कहलाता है? कबीर भी प्रभु की भक्ति में लीन हैं, जबकि संसार बाह्य आडंबरों में उलझकर ईश्वर को खोज रहा है। अत: कबीर स्वयं को दीवाना कहते हैं।

MP BOARD OFFICIAL

प्रश्न 3. मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती है? वह रूप कैसा है।

उत्तर- मीरा कृष्ण की उपासना पति के रूप में करती है। उनका रूप मन को मोहने वाला है। वे पर्वत को धारण करने वाले है। उनके सिर पर मोर का मुकुट सुशोभित रहता है। मीरा उन्हें अपना सर्वस्व मानती हैं। वे स्वयं को उनकी दासी मानती है।

प्रश्न 4. मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' क्यों कहा है

उत्तर- बहन मायके में अपने परिवार वालों से मिलने के लिए खुशी से आती है। वह भाई-बहनों के साथ बिताए हुए क्षणों को याद करती है। घर पहुँचकर जब उसे पता चलता है कि उसका एक भाई जेल में है, तो वह बहुत दु:खी होती है। इस कारण कवि ने घर को 'परिताप का घर' कहा है।

प्रश्न 5. पिता के व्यक्तित्व किसी के विशेषताओं को उकेरा गया है?

उत्तर- 'घर की याद' कविता में पिता के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं को उकेरा गया है।

(1) पिता जी पूर्णत: स्वस्थ हैं। बुढ़ापे ने उन्हें अभी छुआ तक नहीं है।

(2) देश-प्रेमी हैं। उनकी प्रेरणा पाकर ही कवि ने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया।

(3) वे दौड़ लगाते हैं तथा दंड पेलते हैं।

(4) वे मौत के सामने आने पर भी नहीं डरते। वे खिलखिलाकर हँसते हैं।

(5) वे तूफ़ान की रफ्तार से काम करने की क्षमता रखते हैं।

(6) वे गीता का पाठ करते हैं।

(7) वे भावुक प्रवृत्ति के हैं। अपने पाँचवें बेटे की याद आने पर उनकी आँखें भर आती हैं।

प्रश्न 6. चंपा को किस बात पर अचरज होता है? और क्यो?

उत्तर- चंपा निरक्षर है जब कवि अक्षरों को पढ़ना शुरू करता है तो चंपा को हैरानी होती है कि इन अक्षरों से स्वर कैसे निकलते हैं वह अक्षर व ध्वनि के संबंध को समझ नहीं पाती। उसे नहीं पता कि लिखे हुए अक्षर ध्वनि को व्यक्त करने का ही एक रूप है।

प्रश्न 7. उम्रभर के लिए पलायन क्यों करना चाहता है?

उत्तर- गजल कविता में कवि उम्रभर के लिए पलायन इसलिए करना चाहता है क्योंकि कवि के अनुसार नेताओं ने घोषणा की थी कि देश के हर घर को चिराग से रोशन कर देंगे अर्थात् देश के हर नागरिक को हर तरह की सुख सुविधा उपलब्ध कराएंगे।

प्रश्न 8. अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर- 'अपना घर' से तात्पर्य है- मोहमाया से युक्त जीवन। व्यक्ति अपने घर में सभी से अनुराग करता है। वह इसे बनाने व सदैव बचाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। कवयित्री इसे भूलने या त्यागने की बात कहती हैं, क्योंकि घर की मोह-ममता को त्यागे बिना ईश्वर-भक्ति सम्भव नहीं है। घर का मोह त्यागने के बाद हर संबंध समाप्त हो जाता है और मनुष्य दत्त चित्त होकर भगवान की भक्ति में ध्यान लगा सकता है।

प्रश्न 9. कवि ने किस आशय से मेहनत की लूट पुलिस की मार गद्दारी लोग की सबसे खतरनाक नही माना?

उत्तर- कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ को सबसे खतरनाक नहीं माना है। कारण, इनका प्रभाव सीमित होता है। इनकी क्षति-पूर्ति हो सकती है। इन क्रियाओं में व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है। ये स्थितियाँ बुरी तो हैं, किंतु इन्हें बदला जा सकता है। अत: ये सबसे खतरनाक नहीं है।

प्रश्न 10. बस्तियों को शहर की आबोहवा से बचाने की आवश्यकता है?

उत्तर- बस्तियों को शहर की नग्नता व जड़ता की आबो-हवा से बचाने की जरूरत है। आज शहरी जीवन में संग्रह व स्वार्थ की प्रवृत्ति प्रबल है। प्रदूषण व्याप्त है। शहरी जीवन में उमंग, उत्साह व अपनेपन का प्राय: अभाव है। बस्तियों को शहर की आबो-हवा से बचाने पर ही भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रक्षा संभव है।

प्रश्न 11. भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- भाषा में झारखंडीपन का अभिप्राय है- झारखंड की स्वाभाविक बोली, उसका विशिष्ट उच्चारण। कवयित्री चाहती हैं कि संथाली लोग अपनी भाषा की स्वाभाविक विशेषताओं को सहेज कर रखें। यदि संथाल परगने में दूसरी भाषा के लोग आकर बसने लगेंगे तो यहाँ की स्थानीय बोली व भाषा का लोप हो जाएगा, जो कि चिन्ता का विषय है।

प्रश्न 12. भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है।

उत्तर- भक्तिकाल में भक्ति भावना की प्रधानता है। लोकमंगल तथा समन्वय की भावना व्यक्त है। निराशा में आशा का संचार किया है। भाव पक्ष एवं कलापक्ष का सुन्दर समन्वय मिलता है। 'रामचरित मानस' इस युग की कालजयी कृति है। इसलिए भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहते हैं।

प्रश्न 13. निर्गुण भक्ति धारा की दो विशेषताएँ बताते हुए कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर- निर्गुण भक्ति धारा की प्रमुख विशेषताएँ-

(1) गुरु महिमा का गुणगान इस युग के कवियों ने गुरु को सच्चा मार्गदर्शक बताया है।

MP BOARD OFFICIAL

2022/11/10 08:24

(2) मूर्ति पूजा का विरोध इस युग के कवियों ने अपनी कविताओं में मूर्ति पूजा का खंडन किया है।

निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि- कबीर, रैदास।

प्रश्न 14. सगुण भक्ति धारा की दो विशेषताएँ बताते हुए दो कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर- सगुण भक्ति धारा की प्रमुख विशेषताएँ-

(1) सगुण भक्ति में आराध्य के रूप- गुण आकार की कल्पना अपने भावानुरूप कर उसे अपने बीच व्याप्त देखा गया।

(2) सगुण भक्ति में ब्रह्मा के अवतार रूप की प्रतिष्ठा है और अवतारवाद पुराणों के साथ प्रचार में आया। इसी से विष्णु अथवा ब्रह्मा के दो अवतार राम और कृष्ण के उपासक जन-जन के हृदय में बसने लगे।

सगुण भक्ति के कवि- गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास।

प्रश्न 15. रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- रीतिकाल में लक्षण ग्रन्थों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं- (1) रीतिकाल में लक्षण ग्रन्थों की प्रमुख रूप से रचना हुई। (2) इस काल में श्रृंगार रस की प्रधानता रही। नायिका नखशिख वर्णन और नायिका भेद की अधिकता रही। (3) इस काल में रस, छन्द और अलंकार आदि काव्यांगों का पूर्ण रूप से विवेचन हुआ। (4) इस काल के अधिकतर कवि राजा के आश्रित होते थे। इसलिए इस काल में मौलिकता का अभाव रहा। (5) कविता की भाषा मुख्यत: ब्रजभाषा थी। यह ब्रजभाषा परिमार्जित एवं शुद्ध साहित्यिक थी। (6) इस काल के कवियों ने मुक्तक काव्य की ओर विशेष ध्यान दिया। अत: कवित्त, सवैया, दोहा आदि छन्दों को कवियों ने अधिक अपनाया। (7) प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण किया गया। (8) इस काल के कवि आचार्य पहले और कवि बाद में है। (9) इस काल में भक्ति और नीति संबंधी रचनाएँ भी मिलती हैं, किन्तु इनमें शुद्ध भक्ति-भाव नहीं है।

प्रश्न 16. छायावादी कविता की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) छायावादी काव्य में प्रेम और सौन्दर्य की विशेष अभिव्यंजना हुई। (2) इस काव्य में कल्पना तत्व की प्रधानता है। (3) प्रकृति को आलम्बन रूप में ग्रहण किया गया। (4) नारी के प्रति सम्मान की भावना अभिव्यक्त हुई। (5) गीतकाव्य चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। (6) कविता छन्द के नियमों से मुक्त हुई। (7) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग हुआ। भाषा में मधुरता और लाक्षणिकता है। (8) नवीनतम अलंकारों का प्रयोग हुआ। (9) रहस्यवाद की झलक दिखाई दी।

प्रश्न 17. प्रगतिवादी कविता की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर- प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार हैं- (1) प्रगतिवादी काव्य में शोषकों के प्रति घृणा और आक्रोश व्यक्त है और शोषितों के प्रति पूर्ण सहानुभूति व्यक्त है। (2) इस काव्य में रूढ़ियों एवं बंधनों का विरोध एवं उनके उन्मूलन का प्रयास किया गया है। (3) इस काव्य में खूनी क्रान्ति का आव्हान किया गया है और समानता पर जोर दिया गया है। (4) नारी मुक्ति का स्वर मुखरित है। (5) बौद्धिकता की प्रधानता है। (6) भाषा सरल, सुबोध, अलंकृत एवं शैली व्यंग्यात्मक है।

प्रश्न 18. प्रयोगवादी कविताओं की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर- प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार हैं- (1) इस काव्य का दृष्टिकोण अति यथार्थवादी है। (2) इस काव्य में कुण्ठा, निराशा और विद्रोह का स्वर मुखर है। (3) यह कविता अतुकान्त, स्वच्छन्द और ऊबाऊ है। (4) इसमें अतिबौद्धिकता है। (5) इस काव्य की भाषा सशक्त, ओजपूर्ण तथा अभिव्यंजना प्रधान है। (6) उपमाएँ सर्वथा नवीन हैं। (7) व्यंग्यात्मकता है।

प्रश्न 19. नई कविता की विशेषताएँ लिखिए-

उत्तर- विशेषताएँ- (1) नयी कविता जीवन में संघर्ष को स्वीकार करती हैं। (2) इसमें अनुभूति की सच्चाई है। (3) बुद्धि की यथार्थवादी दृष्टि है। (4) नयी कविता ने लोक जीवन से बिम्ब, प्रतीकों, शब्दों तथा उपमानों को चुना है। (5) इसमें नये बिम्ब, नये प्रतीक, नये विशेषण, नये उपमान ग्रहण किए गए हैं। (6) इसमें लोक भाषा प्रयुक्त हुई है।

प्रश्न 20. रहस्यवाद कविता की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- रहस्यवाद की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) रहस्यवाद में आध्यात्मिक तत्व की प्रधानता है। (2) प्रेम तत्व की व्यंजना है। (3) विस्मय, जिज्ञासा एवं मिलन के अनुभव की व्यंजना है। (4) रूपकों और प्रतीकों की सुन्दर योजना है। (5) मुक्तक काव्य शैली प्रयुक्त है। (6) गीति तत्व की प्रधानता है।

प्रश्न 21. रीतिकाल को श्रृंगार काल क्यों कहा जाता है?

उत्तर- रीतिकार को श्रृंगार काल इसलिए कहा जाता है क्योंकि रीतिकाल में अधिकतर कवियों की रचना में श्रृंगार रस की प्रधानता रही है। रीतिकाल में अधिकांश कवि दरबारों पर आश्रित कवि थे। इसलिए उन्हें अपने राजाओं के गुणगान में श्रृंगार प्रधान कविता की रचना करनी पड़ती थी।

कवि परिचय

प्रश्न 1. कबीर अथवा मीरा का काव्य परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर दीजिए- (अ) दो रचनाएँ (ब) भाव पक्ष-कला पक्ष (स) साहित्य में स्थान।

MP BOARD OFFICIAL

2022/11/10 08:36

उत्तर-

कबीरदासजी

1. जीवन परिचय- सन्त महात्मा कबीरदास का नाम संत कवियों में सर्वोपरि है। इनका जन्म 1398 ई. में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ था। कबीरदास ने स्वयं को काशी का जुलाहा कहा है। इनके विधिवत् साक्षर होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। ये स्वयं कहते हैं-

"मसि कागद छुयो नहि, कलम गहि नहि हाथ।"

इन्होंने देशाटन और सत्संग से ज्ञान प्राप्त किया। किताबी ज्ञान के स्थान पर आंखों देखे सत्य और अनुभव को प्रमुखता दी-

"मैं कहता हौं आँखिन देखी तू कहता कागद की लेखी।"

कबीर स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। इनका निधन 1518 ई. में बस्ती के निकट मगहर में हुआ। कबीर के नाम से एक पंथ चला, जो कबीर पंथ कहलाया।

2. रचनाएँ- कबीरदास के पदों का संग्रह बीजक नामक पुस्तक है, जिसमें साखी, सबद एवं रमैनी संकलित है। बीजक मुक्तक काव्य है। इनके दोहों को साखी, गेय पदों को सबद और पद शैली के सिद्धान्तों को रमैनी कहते है।

3. साहित्यिक परिचय- कबीरदास भक्तिकाल की निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन पर नाथों, सिद्धों और सूफी संतों की बातों का प्रभाव है। वे कर्मकांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति-भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे। कबीर घुमक्कड़ थे। इसलिए इनकी भाषा में उत्तर भारत की अनेक बोलियों के शब्द पाए जाते हैं। वे अपनी बात को साफ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे 'वाणी के डिक्टेटर' थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में कहलवा दिया है। बन गया तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।" कबीर के काव्य में अलंकार स्वाभाविक रूप में आ गए हैं। पद-योजना में विभिन्न राग-रागनियों का ध्यान रखा है। आपकी साखियों एवं पदों में शान्त रस है।

कबीर एक कवि ही नहीं, श्रेष्ठ समाज-सुधारक भी थे।

4. साहित्य में स्थान- कबीर भक्तिकाल के अग्रदूत, निर्गुण सन्त, ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि एवं प्रतिनिधि कवि के रूप में हिन्दी जगत में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

मीराबाई

1. जीवन परिचय- कृष्ण भक्त कवियों में प्रमुख मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई. में राजस्थान में मेड़ता के निकट कुड़की नामक गाँव में हुआ था। इनका विवाह 12 वर्ष की आयु में चित्तौड़ के राणा सांगा के पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था। विवाह के 7-8 वर्ष बाद ही इनके पति का निधन हो गया। इनकी माता तो इनके बचपन में ही स्वर्ग सिधार गई थी। इनके मन में बचपन से ही कृष्ण-भक्ति की भावना प्रबल थी। इसलिए वे कृष्ण को अपना आराध्य और पति के रूप में मानती रहीं। संत कवि रैदास इनके गुरु माने जाते हैं।

इन्होंने देश में दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। चित्तौड़ राजघराने में अनेक कष्ट उठाने के बाद ये वापस मेड़ता आ गईं। यहाँ से उन्होंने कृष्ण की लीला भूमि वृंदावन की यात्रा की। जीवन के अंतिम दिनों में वे द्वारका चली गईं। माना जाता है कि वही रणछोड़ दास जी की मंदिर की मूर्ति में वे समाहित हो गईं। इनका देहावसान सन् 1546 ई. में माना जाता है।

2. रचनाएँ- मीरा ने मुख्यत: स्फुट पदों की रचना की। ये पद 'मीराबाई की पदावली' के नाम से संकलित हैं। दूसरी रचना 'नरसीजी-रो-माहेरो' है।

3. साहित्यिक विशेषताएँ- मीरा सगुण धारा की महत्वपूर्ण भक्त कवयित्री थीं। कृष्ण की उपासिका होने के कारण इनकी कविता में सगुण भक्ति मुख्य रूप से विद्यमान है, लेकिन निर्गुण भक्ति का प्रभाव भी मिलता है। इन्होंने लोकलाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक और वैचारिक बंधनों का हमेशा विरोध किया। इन्होंने पर्दा प्रथा का पालन नहीं किया तथा मंदिर में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस नहीं की। मीरा सत्संग को ज्ञान प्राप्ति का माध्यम मानती थीं और ज्ञान को मुक्ति का साधन निन्दा से वे कभी विचलित नहीं हुईं। वे उस युग में रूढ़िग्रस्त समाज में स्त्री-मुक्ति की आवाज बनकर उभरी।

4. भाषा शैली- मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी। इनकी कविता में सादगी व सरलता है। इन्होंने मुक्तक गेय पदों की रचना की। उनके पद लोक व शास्त्रीय संगीत दोनों क्षेत्रों में आज भी लोकप्रिय है। इनकी भाषा मूलत: राजस्थानी है तथा कहीं-कहीं ब्रजभाषा का प्रभाव है। अलंकार इनके काव्य में सहज रूप में आ गए हैं।

5. साहित्य में स्थान- मीरा का भावपक्ष इतना सबल है कि कलापक्ष का अभाव हमें महसूस ही नहीं होता है। मीरा का काव्य तीव्र भावानुभूति का काव्य है। इनके पद गीति-काव्य के चरमोत्कर्ष है। प्रेमोन्माद, तीव्रता, सभ्यता की त्रिवेणी मीरा के काव्य में सतत् प्रवाहित है। गीतिकाव्य में मीरा अप्रतिम है- उनकी कोई सानी नहीं है। मीरा के पद संगीतज्ञों के कण्ठहार बने हुए हैं। मीरा मीरा है।

MP BOARD OFFICIAL

प्रश्न 2. भवानी प्रसाद मिश्र अथवा त्रिलोचन का काव्यगत परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर दीजिए- (अ) दो रचनाएं (ब) भाव-पक्ष-कला पक्ष (स) साहित्य में स्थान

उत्तर-

भवानी प्रसाद मिश्र

1. जीवन-परिचय- कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1913 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ। इन्होंने जबलपुर से उच्च शिक्षा प्राप्त की। इनका हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाओं पर अधिकार था। इन्होंने एक शिक्षक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। फिर वे 'कल्पना' पत्रिका, आकाशवाणी व गाँधीजी की कई संस्थाओं से जुड़े रहे। इनकी रचनाओं में सतपुड़ा-अंचल, मालवा आदि क्षेत्रों का प्राकृतिक वैभव बिखरा पड़ा है। इन्हें साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान, दिल्ली प्रशासन का गालिब पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया। इनकी साहित्य सेवा व समाज सेवा को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने इन्हें पद्म श्री की उपाधि से अलंकृत किया। इनका निधन सन् 1985 ई. में हुआ।

2. रचनाएँ- इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-
सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफरोश, चकित है दु:ख, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इदं न मम् आदि। 'गीतफरोश' इनका पहला काव्य संकलन है। गाँधी पंचशती की कविताओं में कवि ने गाँधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की है। इनके अतिरिक्त शरीर, फसलें और फूल, तूस की आग, शतदल आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

3. काव्यगत विशेषताएँ- भवानी प्रसाद मिश्र कविता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख कवियों में से एक है। गाँधीवाद में इनका अखंड विश्वास था। इन्होंने गाँधी वाड्मय के हिन्दी खंडों का संपादन कर कविता और गाँधी जी के बीच सेतु का काम किया। इनकी कविता हिन्दी की सहज लय की कविता है। इसलिए उन्हें कविता का गाँधी भी कहा गया है। इनकी कविताओं में बोलचाल के गद्यात्मक से लगते वाक्य-विन्यास को ही कविता में बदल देने की अद्भुत क्षमता है। इसी कारण इनकी कविता सहज और लोक के निकट है।
मिश्रजी की कविता में जीवन के सुख-दु:ख है, प्रकृति का बहुरंगी सौंदर्य वह वर्तमान युग को विसंगतियां है, मध्यम वर्ग की विडम्बनाएँ हैं, मानव की गरिमा है और स्वाधीनता की चेतना भी अभिव्यक्त है।

4. साहित्य में स्थान- नई कविता के दौर के कवियों में मिश्रजी के काव्य में पर्याप्त व्यंग्य और क्षोभ है, किन्तु वह सृजनात्मक है। आप गाँधीवाद से प्रभावित एक श्रेष्ठ मानवतावादी कवि के रूप में हिन्दी में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

त्रिलोचन

1. जीवन परिचय- कवि श्री वासुदेव सिंह त्रिलोचन का जन्म उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर जिले के चिरानी पट्टी में सन् 1917 में हुआ। ये हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में लिखा। आप अनुशासन के कवि और बहुभाषाविद थे। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों के आधार पर इन्हें साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। उत्तरप्रदेश सरकार ने भी इन्हें 'महात्मा गाँधी पुरस्कार' से सम्मानित किया 'शलाका सम्मान' भी इनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। इनका निधन 9 दिसम्बर, 2007 में हुआ।

2. रचनाएँ- इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
(अ) काव्य- धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताये हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, सरघान, तम्हें सौंपता हूँ, चैती, अमोला, मेरा घर, जीने की कला आदि।
(ब) गद्य- देशकाल, रोजनामचा, काव्य और अर्थबोध, मुक्तिबोध की कविताएँ। इसके अतिरिक्त हिन्दी के अनेक कोशों के निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

3. साहित्यिक विशेषताएँ- श्री त्रिलोचन जीवन में निहित मंद लय के कवि हैं। प्रबल आवेग और त्वरा की अपेक्षा इनके यहाँ काफी कुछ स्थिर है। इनकी भाषा छायावादी रूमानियत से मुक्त है तथा उसका काव्य ठाठ ठेठ का गाँव की जमीन से जुड़ा हुआ है। ये हिन्दी में सॉनेट (अंग्रेजी छंद) को स्थापित करने वाले कवि के रूप में भी जाने जाते है। आपने बोलचाल की भाषा को चुटीला और नाटकीय बनाकर कविताओं को नया आयाम दिया है।

4. साहित्य में स्थान- श्री त्रिलोचन हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील काव्य धारा के कवि के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

प्रश्न 3. दुष्यंत कुमार अथवा, अक्क महादेवी का काव्यगत परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर दीजिए- (अ) दो रचनाएँ (ब) भाव-पक्ष- कला-पक्ष (स) साहित्य में स्थान

उत्तर-

दुष्यंत कुमार

1. जीवन परिचय- कवि दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तरप्रदेश के बिजनौर जिले के राजपुर नवादा गाँव में सन् 1933 ई. में हुआ था। इनके बचपन का नाम दुष्यंत नारायण था। काव्य रचना में इनकी बचपन से रुचि थी। प्रयाग विश्वविद्यालय से इन्होंने एम.ए. किया। यहीं से इनका साहित्यिक जीवन आरंभ हुआ। वहाँ की साहित्यिक संस्थाएँ 'परिमल' की गोष्ठियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। 'नए पत्ते' जैसे महत्वपूर्ण पत्र के साथ जुड़े रहे। उन्होंने आकाशवाणी और मध्यप्रदेश के राजभाषा विभाग में काम किया। अल्पायु में इनका निधन सन् 1975 में हो गया।

MP BOARD OFFICIAL

2. प्रमुख रचनाएँ- इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
काव्य संग्रह- सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, साये में धूप, जलते हुए वन का वसंत।
गीति-नाट्य- एक कंठ विषपायी।
उपन्यास- छोटे-छोटे सवाल, आँगन में एक वृक्ष, दोहरी जिंदगी।

3. साहित्यिक विशेषताएँ- कवि दुष्यंत कुमार की साहित्यिक उपलब्धियाँ अद्‌भुत है। इन्होंने हिन्दी में गजल विधा को प्रतिष्ठित किया। इनके कई शेर साहित्यिक एवं राजनीतिक सभाओं में लोकोक्तियों की तरह दुहराए जाते हैं। साहित्यिक गुणवत्ता से समझौता न करते हुए भी इन्होंने लोकप्रियता के नए प्रतिमान कायम किए। गजल के बारे में वे लिखते हैं- "मैं स्वीकार करता हूं कि गजल को किसी की भूमिका की जरूरत नहीं होती.... मैं प्रतिबद्ध कवि हूँ.... यह प्रतिबद्धता किसी पार्टी से नहीं, आज के मनुष्य से है और मैं जिस आदमी के लिए लिखता हूँ, यह भी चाहता हूँ कि वह आदमी उसे पढ़े और समझे।"
इनकी गजलों में तत्सम शब्दों के साथ उर्दू के शब्दों का काफी प्रयोग हुआ है।
हिन्दी में और भी गजलें लिखी गई हैं, पर दुष्यंत कुमार की गजलें सर्वथा अलग है। इनमें सादगी और तीखापन है। इनके गीत अति सुंदर और भावपूर्ण है।
'एक कंठ विषपायी' शीर्षक गीतिनाट्य हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण व बहुप्रशंसित कृति है।

4. साहित्य में स्थान- कवि दुष्यन्त कुमार ने गजल की उर्दू परम्परा को एक नयी दिशा प्रदान की। कई नये कवियों को भी नवीन दिशा दिखाई। सामाजिक यथार्थ के चित्रण में आपकी गजलें महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आपने अपनी गजलों में सामान्य जन की पीड़ा और जिजीविषा को प्रभाव शाली रूप में चित्रित किया है। समग्र रूप में हिन्दी साहित्य में कवि, गीतकार एवम् एक प्रतिभाशाली गजलकार के रूप में दुष्यन्त कुमार सदैव स्मरणीय रहेंगे।

अक्क महादेवी

1. जीवन परिचय- कवयित्री अक्क महादेवी का जन्म कर्नाटक के उड़तरी गाँव जिला-शिवमोगा में 12वीं सदी में हुआ था। इनके आराध्य चन्नमल्लिकार्जुन देव अर्थात् शिव थे। इनके गुरु कन्नड़ संत कवि बसवन्ना और अल्लामा प्रभु थे। कन्नड़ भाषा में 'अक्क' शब्द का अर्थ बहिन होता है। कहा गया है कि अक्क महादेवी अपूर्व सुंदरी थी। एक बार वहाँ का राजा इनके अद्‌भुत अलौकिक सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो गया। उसने इनसे विवाह हेतु इनके परिवार पर काफी दबाव डाला। अक्क महादेवी ने विवाह के लिए राजा के सामने तीन शर्तें रखीं। विवाह के उपरान्त राजा ने उन शर्तों का सही पालन नहीं किया। इसलिए महादेवी ने उसी क्षण राज-परिवार को त्याग दिया। अक्क ने सिर्फ राजमहल ही नहीं त्यागा, वहाँ से निकलते समय पुरुष प्रधानता के विरुद्ध अपने आक्रोश की अभिव्यक्ति के रूप में अपने वस्त्रों को भी उतार फेंका। वस्त्रों का उतार पेंकना केवल वस्त्रों का त्याग नहीं, बल्कि एकांगी मर्यादाओं और केवल स्त्रियों के लिए निर्मित नियमों का तीव्र विरोध था। स्त्री केवल शरीर नहीं हैं, इसके गहरे बोध के साथ शिव, महावीर, बुद्ध आदि महापुरुषों के समक्ष खड़े होने का प्रयास था। इस दृष्टिकोण से देखें तो मीरा की पंक्ति 'तन की आस कबहू नहीं कीनी, ज्यों रणमाँही सूरो' अक्क पर पूर्णत: चरितार्थ होती है। अक्क के कारण शैव आंदोलन से बड़ी संख्या में स्त्रियाँ जुड़ीं जिनमें अधिकतर निचले वर्गों से थीं और अपने संघर्ष व यातना को कविता के रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की।
इस प्रकार अक्क महादेवी की कविता पूरे भारतीय साहित्य में क्रांतिकारी चेतना का पहला सर्जनात्मक दस्तावेज है और संपूर्ण स्त्रीवादी आंदोलन के लिए एक अजस्त्र प्रेरणा स्रोत भी।

2. प्रमुख रचनाएँ- इनकी रचना हिन्दी में 'वचन-सौरभ' के नाम से तथा अंग्रेजी में 'स्पीकिंग ऑफ शिवा के नाम से प्रख्यात हैं।

3. काव्यगत विशेषताएँ- पाठ्यक्रम में महादेवीजी के दो वचन लिए गए हैं। इन्हें श्री केदारनाथ सिंह ने अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवादित किया है। प्रथम वचन में इन्द्रियों पर नियंत्रण का सन्देश दिया गया है, जो केवल उपदेशात्मक न होकर प्रेमभाव भरा मनुहार रूप में है। द्वितीय वचन में एक भक्त का ईश्वर (शिव) के प्रति पूर्णत: समर्पण है। शिव की भक्ति में अक्क महादेवी अपनी हर मौलिक वस्तु के प्रति विरक्त रहना चाहती है। वे ऐसी निस्पृह स्थिति की कामना करती हैं, जिससे उनका अहंभाव पूर्णत: विगलित हो जाए।

4. साहित्य में स्थान- अक्क महादेवी मूलत: कन्नड़ भाषा की कवयित्री है। उनका काव्य शिव-भक्ति का अनुपम रस है। आपके काव्य से हिन्दी काव्य सुरक्षित एवम् पल्लवित हुआ है। आपका काव्य परवर्ती कवियों के लिए प्रेरणा का महान् स्रोत रहा है। हिन्दी साहित्य आप से सदैव गौरवान्वित रहेगा।

प्रश्न 4. अवतार सिंह पाश अथवा निर्मला पुतुल का काव्यगत परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर दीजिए- (अ) दो रचनाएं (ब) भाव पक्ष- कला पक्ष (स) साहित्य में स्थान

उत्तर-

अवतार सिंह पाश

1. जीवन परिचय- कवि श्री अवतार सिंह पाश का जन्म सन् 1950 ई. में पंजाब राज्य के जालंधर जिले के तलवंडी सलेम

MP BOARD OFFICIAL

गाँव में हुआ। इनका संबंध मध्यमवर्गीय किसान परिवार से था। इसलिए इनकी स्नातक तक की शिक्षा अनियमित तरीके से हुई। इन्होंने जनचेतना फैलाने के लिए अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। आपने सिआड, हेमज्योति, हॉक, एंटी-47 जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। ये कुछ समय तक अमेरिका में भी रहे। इनकी मृत्यु सन् 1988 ई. में हुई।

2. रचनाएँ- इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं-
लौह कथा, उड़दें बाजा मगर, साडै समयि बिच, लड़ेंगे साथी (पंजाबी), बीच का रास्ता नहीं होता। लहू है कि तब भी गाता है।

3. काव्यगत विशेषताएँ- पाश समकालीन पंजाबी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। ये जन आंदोलनों से जुड़े रहे और विद्रोही कविता का नया सौंदर्य विधान विकसित कर उसे तीखा किंतु सृजनात्मक तेवर दिया। इनकी कविताएँ विचार और भाव के सुन्दर संयोजन से बनी गहरी कविताएँ हैं। आपकी कविताओं में लोक संस्कृति और परंपरा का गहरा बोध मिलता है। पाश की कविताओं में वह व्यथा, निराशा और आक्रोश नजर आता है, जो गहरी संपृक्कता के बिना संभव ही नहीं है।

4. साहित्य में स्थान- श्री अवतार सिंह संधू 'पाश' मूलत: पंजाबी भाषा के कवि हैं। आपके काव्य में संस्कृति और परम्परा की गहरी छाप है। पाश ने व्यथा व निराशा को तीखे स्वरों में व्यक्त किया है। समाज, संस्कृति और राजनीति में आए दोषों से लड़ने में 'पाश' की कविताएँ ढाल का काम करती हैं। हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में आपका योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

निर्मला पुतुल

1. जीवन परिचय- निर्मला पुतुल का जन्म सन् 1972 में झारखंड राज्य के दुमका नामक स्थान पर एक आदिवासी परिवार में हुआ इनका प्रारंभिक जीवन बहुत संघर्षमय रहा। इनके पिता व चाचा शिक्षक थे। घर में शिक्षा का माहौल था। इसके बावजूद रोटी की समस्या से जूझने के कारण नियमित अध्ययन में अनेक बाधाएँ रहीं।

इन्होंने सोचा कि नर्स बनने पर आर्थिक कष्टों से राहत मिल जाएगी। अत: इन्होंने नर्सिंग में डिप्लोमा किया तथा काफी समय बाद इग्नू से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इनका संथाली समाज और उसके रागबोध से गहरा सम्बन्ध पहले से था, नर्सिंग की शिक्षा के समय बाहर की दुनिया से भी परिचय हुआ। दोनों समाजों की क्रिया-प्रतिक्रिया वह अपने परिवेश की वास्तविक स्थिति को समझने में सफल हो सकीं।

2. रचनाएँ- इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-
नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में।

3. साहित्यिक परिचय- कवयित्री ने आदिवासी समाज विसंगतियों को गंभीरता से उकेरा है। इनकी कविताओं का बिंदु वे स्थितियाँ हैं, जिनमें कड़ी मेहनत के बावजूद खा दशा, कुरीतियों के कारण बिगड़ती पीढ़ी, थोड़े लाभ के लि बड़े समझौते, पुरुष वर्चस्व, स्वार्थ के लिए पर्यावरण की हानि शिक्षित समाज का व्यवसायियों के हाथों की कठपुतली बन आदि है।

वे आदिवासी जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं से, कलात्मकता के साथ हमारा परिचय कराती हैं। संथाली समाज के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं को बेबाकी से हमारे सामने रखती हैं। संथाली समाज में जहाँ एक ओर सादगी, भोलापन, प्रकृति से लगाव और कठोर परिश्रम करने की क्षमता जैसे सकारात्मक तत्व है, वहीं दूसरी ओर उसमें अशिक्षा और शराब की ओर बढ़ता झुकाव जैसी कुरीतियाँ भी विद्यमान है।

4. साहित्य में स्थान- निर्मला पुतुल संथाली भाषा की एक प्रभावशाली व प्रगतिशील कवयित्री के रूप में अपना प्रमुख स्थान रखती है।

प्रश्न- निम्न पद्यांशों की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

1. "हम तौ एक करि जांनां।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग, जिन नाहिंन पहचिांनां॥
एकै पवन एक ही पानीं, एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भांडै, एकै कोंहरा सांनां॥

सन्दर्भ- प्रस्तुत प्रद्यांश आरोह भाग एक में संकलित पदों से अवतरित किया गया है। इसके रचयिता निर्गुण परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि महात्मा कबीरदास हैं।

प्रसंग- उक्त पद में, कबीर ने एक ही परम तत्व की सत्ता को स्वीकार किया है, जिसकी पुष्टि कई उदाहरणों से करते हुए कहते हैं।

व्याख्या- मैंने तो जान लिया है कि ईश्वर एक ही है। इस तरह से मैंने ईश्वर के अद्वैत रूप को पहचान लिया है। कुछ लोग ईश्वर को अलग-अलग बताते हैं। उनके लिए नरक की स्थिति है, क्योंकि वे वास्तविकता को नहीं पहचानते। वे आत्मा और परमात्मा को अलग-अलग मानते हैं। कवि ईश्वर की अद्वैतता का प्रमाण देते हुए कहता है कि संसार में एक जैसी हवा बहती है, एक जैसा पानी है तथा एक ही प्रकाश सब में समाया हुआ है। कुम्हार एक ही तरह की मिट्टी से सब बर्तन बनाता है, भले ही बर्तनों का आकार-प्रकार अलग-अलग हो। बढ़ई या सुतार लकड़ी को तो काट सकता है, परंतु आग को नहीं काट सकता। इसी प्रकार शरीर नष्ट हो जाता है, परंतु उसमें व्याप्त आत्मा सदैव अमर रहती हैं। परमात्मा प्रत्येक प्राणी के हृदय में समाया

MP BOARD OFFICIAL

हुआ है, भले ही उसने कोई भी रूप धारण किया हो। यह संसार माया के जाल में फँसा हुआ है। माया ही संसार को लुभाती है। इसलिए मनुष्य को किसी भी बात को लेकर घमंड नहीं करना चाहिए। अंत में कबीरदास कहते हैं कि जब मनुष्य निर्भय हो जाता है, तो उसे कुछ नहीं सताता। कबीर भी अब निर्भय हो गया है तथा ईश्वर का दीवाना हो गया है। ईश्वर में उसकी आस्था प्रगाढ़ हो गई है।

विशेषताएँ- (1) कबीर ने आत्मा और परमात्मा को एक बताया है। (2) उन्होंने माया-मोह व गर्व को व्यर्थ बताया है। (3) 'एक-एक' में यमक, 'खाक' और 'कोहरा' में रूपकातिश्योक्ति अलंकार है। (4) सधुक्कड़ी भाषा प्रयुक्त है। (5) पद में गेयता व संगीतात्मकता है।

2. "जैसे बाढ़ी काष्ठ ही काटै, अगिनि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि तूँही, व्यापक धरै सरूपै सोई।।"

उत्तर- कबीरदास ईश्वर के स्वरूप के विषय में अपनी बात उदाहरण से स्पष्ट करते हैं. वह कहते हैं कि जिस प्रकार बढ़ई या सुतार लकड़ी को काट सकता है, परंतु उस लकड़ी में समाई हुई अग्नि को नहीं काट सकता, उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में ईश्वर व्याप्त है। शरीर नष्ट होने पर आत्मा नष्ट नहीं होती। वह अमर है। आगे वे कहते हैं कि संसार में अनेक तरह के प्राणी हैं, परंतु सभी के हृदय में ईशवर समाया हुआ है और वह एक ही है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापक तथा अजर-अमर है। जो जिस रूप में प्रभु की भक्ति करता है, उसे प्रभु उसी रूप में दिखाई देते हैं।

3. "मेरे तो गिरिधर गापाल, दूसरो न कोई।
जा के सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
छांडि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोयी।
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी।
अब त बेलि फैल गयी, आणंद-फल होयी।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग एक' में संकलित मीराबाई के पदों से अवतरित किया गया है।

प्रसंग- उक्त पद में मीराबाई ने भगवान श्रीकृष्ण को पति के रूप में मानकर उनसे अपने उद्धार की प्रार्थना करते हुए कहा है-

व्याख्या- मेरे तो गिरधर गोपाल, अर्थात् कृष्ण ही सब कुछ हैं। दूसरे से मेरा कोई संबंध नहीं है। जिसके सिर पर मोर का मुकुट है, वही मेरा पति है। उनके लिए मैंने परिवार की मर्यादा भी त्याग दी है। अब मेरा कोई क्या कर सकता है? अर्थात् मुझे किसी की परवाह नहीं है। मैं संतों के निकट बैठकर ज्ञान प्राप्त करती हूँ। मैंने लोक-लाज भी खो दी है। मैंने अपने आँसुओं के जल से सींच-सींचकर प्रेम की बेल बोई है। अब यह बेल फैल गई है और इस पर आनंद रूपी फल लगने लगे हैं। आगे मीराबाई कहती हैं कि मैंने कृष्ण के प्रेम रूप दूध को भक्ति रूपी मथानी में बड़े प्रेम से बिलोया है। मैंने दही से सार तत्व अर्थात् घी को निकाल लिया और छाछ रूपी सारहीन अंशों को छोड़ दिया। अंत मे वे प्रभु के भक्तों को देखकर बहुत प्रसन्न होती हैं और संसार के लोगों को मोह-माया में लिप्त देखकर रोती है, अति दुखित होती है। वे स्वयं को गिरधर की दासी बताती हैं। और अपने उद्धार के लिए उनसे प्रार्थना करती हैं।

विशेषताएँ- (1) यहाँ मीरा को कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति भावना व समर्पण भाव व्यक्त हुआ है। (2) माधुर्य गुण है। (3) 'बैठि-बैठि', 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्तिप्रकाश और मोर-मुकुट, 'प्रेम-बेलि' तथा 'आणंद-फल' में रूपक अलंकार का सहज प्रयोग है। (4) राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग है। (5) संगीतात्मकता व गेयता है।

4. आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बँधा बैठा हूँ अभागा।"

सन्दर्भ- उपर्युक्त काव्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित कविता 'घर की याद' से उद्धृत किया गया है। इसके रचयिता कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र है।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश में कवि वर्णन करता है कि एक रात लगातार बारिश हो रही थी तभी उसे घर की याद आती है। वह पिता के प्यार के बारे में बताता है।

व्याख्या- वह उनका भाग्यहीन पाँचवाँ पुत्र है। वह उनके साथ नहीं है, परंतु पिताजी को सबसे प्यारा है। जब भी कभी कवि के बारे में चर्चा चलती है, तो वे भाव-विभोर हो जाते हैं। आज उन्हें अपने सोने जैसे बेटे तुच्छ लगे होंगे, क्योंकि उनका सबसे प्यारा बेटा उनसे दूर जेल में बैठा यातनाएँ सह रहा है।

विशेषताएँ- (1) पिता को भवानी से बहुत लगाव था। (2) 'सोने पर सुहागा' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है। (3) खड़ी बोली का प्रयोग है।

5. कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलों यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।

सन्दर्भ- प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग एक' में

MP BOARD OFFICIAL

संकलित 'गज़ल' से अवतरित किया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कवि एवं गजलकार श्री दुष्यन्त कुमागर हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने हमारी भारतीय राजनीति और समाज में जो दोष दिखाई देते हैं उस ओर प्रबुद्धजन का ध्यान आकर्षित करते हुए आगे के लिए दिशा-निर्देश करते हुए लिखा है।

व्याख्या- हमारे देश के नेताओं ने चुनावों के दौरान घोषणा की थी कि देश के हर घर कों चिराग अर्थात् सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाएंगे। आज़ स्थिति ऐसी है कि शहरों में भी चिराग अर्थात् सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। नेताओं की घोषणाएँ मिथ्या रही हैं। दूसरे शेर में, कवि कहता है कि देश में अनेक संस्थाएँ हैं, जो नागरिकों के कल्याण के लिए काम करती हैं। कवि उन्हें 'दरख्त' की संज्ञा देता है। इन दरख्तों के नीचे छाया मिलने की बजाय धूप मिलती है। ये संस्थाएँ ही आम आदमी का शोषण करने में लगी हैं। चारों तरफ भारी भ्रष्टाचार फैला हुआ है। कवि इन सभी व्यवस्थाओं से दूर रहकर अपना जीवन बिताना चाहता है। वह देश में आमूल परिवर्तन के लिए नवयुवकों का आह्वान करता है।

विशेषताएँ- (1) कवि ने स्वाधीन भारत के नेताओं के झूठे आश्वसान व संस्थाओं द्वारा किए जा रहे आम आदमी के शोषण के विरुद्ध प्रबुद्धजन का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। (2) चिराग, मयस्सर, दरख्त, साये आदि उर्दू शब्दों के प्रयोग से भावों में गहनता आई है। खड़ी बोली में प्रभावी अभिव्यक्ति है। (3) लक्षणा शक्ति का निर्वाह है। (4) 'साये में धूप लगती है' में विरोधाभास अलंकार है।

6. "तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।"

उत्तर- उक्त पंक्तियों में शायर सत्ता के खिलाफ लोगों को जागरूक करना चाहता है। इससे सत्ता को क्रांति का खतरा लगता है। वे स्वयं को बचाने के लिए शायरों की जबान अर्थात् कविताओं पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। जैसे गजल के छंद के लिए बंधन की सावधानी जरूरी है, उसी तरह शासकों को भी अपनी सत्ता कायम रखने के लिए विरोध को दबाना जरूरी होता है।

7. "हे भूख! मत मचल,
प्यास, तड़प मत,
हे नींद! मत सता,
क्रोध, मचा मत उथल-पुथल,
हे मोह! पाश अपने ढीले कर,
लोभ, मत ललचा,
हे मद! मत कर मदहोश,
ईर्ष्या, जला मत,
ओ चराचर! मत चूक अवसर,
आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग एक' से अवतरित किया गया है। इसकी कवयित्री अक्क महादेवी जी हैं।

प्रसंग- उक्त काव्यांश में कवयित्री ने इंद्रियों पर नियंत्रण रखने का संदेश देते हुए लिखा है।

व्याख्या- हे भूख! तू मचलकर मुझे मत सता। सांसारिक प्यास को कहती हैं कि तू मन में और पाने की इच्छा मत जगा। हे नींद! तू मानव को सताना छोड़ दें, क्योंकि नींद से उत्पन्न आलस्य के कारण वह प्रभु-भक्ति को भूल जाता है। हे क्रोध! तू उथल-पुथल मत मचा, क्योंकि तेरे कारण मनुष्य दूसरे का अहित करने की सोचता रहता है। हे लोभ! तू मानव को ललचाना छोड़ दे। हे अहंकार! तू मनुष्य को अधिक पागल न बना। ईर्ष्या तू मनुष्य को जलाना छोड़ दे। वे सृष्टि के जड़-चेतन जगत को सम्बोधित करते हुए कहती है कि तुम्हारे पास शिव की भक्ति का जो सुनहरा अवसर है, उससे चूकना मत। मैं तुम्हारे लिए शिव का संदेश लेकर आई हूँ। ग्रन्थों में परमेश्वर की प्राप्ति ही मानव जीवन का परम लक्ष्य।

विशेषताएँ- (1) ईश्वर की भक्ति के लिए इंद्रिय विजयी होना व भाव नियंत्रण परम आवश्यक है। (2) सभी मनो भावों व वृत्तियों को मानवीय पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है। (3) संबोधन शैली है। (4) खड़ी बोली का प्रयोग है। (5) शांत रस का परिपाक है।

8. "सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना,
न होना तड़प का सब सहन कर जाना,

सन्दर्भ- प्रस्तुत काव्यांश पंजाबी भाषा के सशक्त कवि पाश की रचना सबसे खतरनाक से अवतरित किया गया है।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने दिन व दिन उत्तरोत्तर नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है। कवि का कथन है कि-

व्याख्या- सबसे खतरनाक स्थिति वह है, जब व्यक्ति जीवन के उल्लास व उमंग में मुँह मोड़कर निराशा व अवसाद से घिरकर सन्नाटे में जीने का अभ्यस्त हो जाता है। उसमें कभी न समाप्त होने वाली शांति घर कर जाती है। वह मूकदर्शक बनकर सब कुछ चुपचाप सहन करता चला जाता है। परम्परा पर आधारित जीवन जीने लगता है। वह घर से अपने काम पर चला जाता है और काम समाप्त करके घर लौट आता है। उसके सभी सपने

MP BOARD OFFICIAL

2022/11/10 08:37

मर जाते हैं। जीवन में को नयापन नहीं रह जाता है। उसकी सारी इच्छाएँ मर जातीं है। ये सब परिस्थितियाँ अत्यंत खतरनाक होती है। अन्त में कवि कहता है कि सबसे खतरनाक दृष्टि वह है, जो अपनी कलाई पर बँधी घड़ी को सामने चलता देख कर सोचे कि जीवन स्थिर है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य नित्य हो रहे परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को नहीं बदलना चाहता है। उसके लिए जीवित रहना मात्र जीवन का उद्देश्य रह गया है।

विशेषताएँ- (1) कवि जीवन में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन की माँग करता है। (2) 'घड़ी' शब्द मे श्लेष अलंकार है। (3) 'सपनो का मर जाना' में लाक्षणिक प्रयोग है। (4) खड़ी बोली का प्रयोग है।

9. "अपनी बस्तियों को नंगी होने से
शहर की आबो-हवा से बचाएँ उसे अपने चेहरे पर
संथाल परगना की माटी का रंग बचाएँ डूबने से
पूरी की पूरी बस्ती को हड़िया में

सन्दर्भ- उपर्युक्त काव्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग एक' में संकलित आज मिलकर बचाएँ, नामक कविता से उद्धृत है। इसकी लेखिका संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल है।

प्रसंग- यह कविता संथाली भाषा से अनूदित है। कवयित्री अपने परिवेश को शहरी अपसंस्कृतिक से बचाने का आह्वान करते हुए कहती हैं कि-

व्याख्या- हम सब मिलकर अपनी बस्तियों को शहरी जीवन शैली के प्रभाव से अमर्यादित होने से बचें। शहरी सभ्यता ने हमारी बस्तियों का पर्यावरणीय व मानवीय शोषण किया है। हमें अपनी बस्ती को शोषण से बचाना है, अन्यथा पूरी बस्ती हड्डियों के ढेर में दब जाएगी। कवयित्री कहती है कि हमें अपनी संस्कृति को बचाना हुए। हमारे चेहरे पर संथाल परगने की मिट्टी का रंग झलकना चाहिए। भाषा में बनावटीपन न होकर झारखंड का प्रभाव होना चाहिए। ■

इकाई- 2 काव्य बोध

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1. रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम परिभाषा है-
(अ) आचार्य विश्वनाथ (ब) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(स) पंडित जगन्नाथ (द) मम्मट

2. महाकाव्य में सर्गों की संख्या होती है-
(अ) एक (ब) चार से कम
(स) आठ या आठ से अधिक (द) चार से अधिक

3. अब तो बेलि फैली गई आनन्द फल होयी में अलंकार है-
(अ) अनुप्रास (ब) यमक (स) रूपक (द) उपमा

4. "जैसे बाढ़ीं काष्ट ही काटे, अग्नि ना काटे कोई" में अलंकार है-
(अ) अनुप्रास (ब) श्लेष (स) दृष्टांत (द) यमक

5. "यहाँ दरख्तों के साये में धूप" में अलंकार है-
(अ) विरोधाभास (ब) अपहुति
(स) अनुप्रास (द) यमक

6. शृंगार, शांत व करुण रस की प्रधानता होती है-
(अ) माधुर्य (ब) ओज (स) प्रसाद (द) शब्द गुण

7. निम्न में से कौनसा खण्डकाव्य नहीं है-
(अ) सुदामाचरित (ब) पंचवटी
(स) रश्मिरथी (द) पद्मावत

8. करुण रस का स्थाई भाव है-
(अ) शोक (ब) हास (स) रति (द) रौद्र

9. गजल में लिखे जाने वाले हर दो मिसरे के समूह को कहते हैं-
(अ) मिसरा (ब) शेर (स) काफिया (द) रुबाइयाँ

10. "यशोदा हरि पालने झुलाबै हलरावै दुलरावै जोई सोई कुछ गावै"
उपर्युक्त पंक्ति में आश्रय की चेष्टा को दिए गए विकल्पों में से चयन कर लिखिए-
(अ) पुत्र के प्रति स्नेह (ब) कृष्ण का पालना
(स) मातायशोदा (द) कृष्णा को पालने में झुलाना

11. श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे। शोक अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे।
उपर्युक्त पंक्तियों में अनुभाव पहचानिए-
(अ) श्रीकृष्ण के वचन (ब) करतल युगल
(स) अर्जुन का शोक (द) अर्जुन का क्रोध

12. प्रबंध काव्य के भेद हैं-
(अ) खण्डकाव्य, महाकाव्य, आख्यानिक गीति
(ब) दृश्य काव्य, श्रव्य काव्य, चंपू काव्य
(स) महाकाव्य, चंपू काव्य, दृश्य काव्य
(द) चंपू काव्य, महाकाव्य

13. जहाँ कारण होने पर भी कार्य न हो वहाँ अलंकार होता है-
(अ) व्यतिरेक (ब) विभावना
(स) विशेषोक्ति (द) विरोधाभास

14. "करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान, रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान" पंक्ति में कौनसा अलंकार है-
(अ) विरोधाभास (ब) दृष्टांत
(स) व्यतिरेक (द) विभावना

MP BOARD OFFICIAL

2022/11/10 08:37

उत्तर- (1) (अ), (2) (द), (3) (स), (4) (ब), (5) (अ), (6) (अ), (7) (द), (8) (अ), (9) (ब), (10) (अ), (11) (द), (12) (अ), (13) (ब), (14) (ब)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थान में सही शब्द चुनकर लिखिए-

(1) प्रबंध काव्य के अन्तर्गत ..... आता है।
(सूरसागर/साकेत)

(2) कामायनी जयशंकर प्रसाद का प्रमुख ..... हैं।
(महाकाव्य/खण्डकाव्य)

(3) जिस वाक्य में विशेष अर्थ का बोध हो वहाँ ..... शब्द शक्ति होती है। (लक्षणा/व्यंजना)

(4) दोहा छंद ..... काव्य के अन्तर्गत आता है।
(प्रबंध/मुक्तक)

(5) 'हम तो एक-एक करि जाना' पंक्ति में ..... अलंकार है। (यमक/उपमा)

(6) नाटक विधा ..... काव्य है। (दृश्य/श्रव्य)

(7) सूर्य डूब गया में ..... शब्द शक्ति है।
(अभिधा/व्यंजना)

(8) चंपा काले काले अक्षर नहीं चीन्हती में ..... गुण है।
(माधुर्य/प्रसाद)

(9) 'पेट में चूहे कूदना' में ..... शब्द शक्ति है।
(लक्षणा/व्यंजना)

(10) गजल में लिखि जाने वाली हर लाइन या पंक्ति ..... कहलाती है। (मिसरा/काफिया)

(11) 22 से 26 वर्णों के वृत्त को ..... कहते है।
(सवैया/रोला)

(12) संचारी भावों की संख्या ..... है। (33/35)

(13) छंद में अल्प विराम को ..... कहते हैं (यति/गति)

(14) दोहा छंद मात्राओं के आधार पर ..... कहते है।
(अर्ध सम मात्रिक/सममात्रिक)

(15) आश्रय की चेष्टाओ को ..... कहते है।
(अनुभाव/उद्दीपन)

(16) नीर भरे नित प्रति रहे तऊ न प्यास बुझाय में ..... अलंकार है। (विशेषोक्ति/विभावना)

(17) हास, वत्सल, रति ..... है। (स्थाई भाव/संचारी भाव)

(18) जिस काव्य में एक घटना का विवरण एवं एक ही छंद का प्रयोग होता है उसे ..... कहते हैं। (खण्डकाव्य/महाकाव्य)

(19) किसी बात को सिद्ध कर सत्यता प्रमाणित करने के लिए उदाहरण दिया जाये वहाँ ..... होता है।
(दृष्टांत अलंकार/विशेषोक्ति अलंकार)

उत्तर- (1) साकेत, (2) महाकाव्य, (3) व्यंजना, (4) मुक्तक, (5) यमक, (6) दृश्य, (7) व्यंजना, (8) माधुर्य, (9) लक्षणा, (10) मिसरा, (11) रोला, (12) 33, (13) यति, (14) अर्ध सम मात्रिक, (15) अनुभाव, (16) विशेषोक्ति (17) स्थाई भाव, (18) खण्डकाव्य, (19) दृष्टांत अलंकार

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाकर लिखिए-

(1)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) संतन ढिग बैठि-बैठि	(क) माधुर्य
(2) पीपर पाथर पूजन लागे	(ख) महाकाव्य
(3) वीर रौद्र भयानक।	(ग) अनुप्रास
(4) साकेत।	(घ) पुनरुक्ति प्रकाश
(5) जहाँ काव्य को सुनने से हृदय द्रवित हो	(ड़) ओज गुण

उत्तर- (1) (घ), (2) (ग), (3) (ड़), (4) (ख), (5) (क)

(2)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) कुंडलिया छंद	(अ) 11-13 के विराम
(2) दोहा छंद	(ख) 8888 पर यति
(3) रोला + दोहा	(ग) कुंडलिया
(4) घनाक्षरी	(घ) छः चरण
(5) रोला	(ङ) 24 मात्रा

उत्तर- (1) (घ), (2) (क), (3) (ङ), (4) (ग), (5) (ख)

(3)

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) गजल	(क) मिसरा
(2) शब्द के अर्थ का व्यापार।	(ख) गुण
(3) जहाँ रस होता है	(ग) महाकाव्य
(4) सर्ग के में बंधी रचना	(घ) शब्द शक्ति
(5) गजल की पंक्ति	(ङ) उर्दू साहित्य विधा

उत्तर- (1) (क), (2) (घ), (3) (ख), (4) (ग), (5) (ङ)

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर लिखिए-

(1) खण्डकाव्य की परिभाषा लिखिए।

(2) महाकाव्य की परिभाषा लिखिए।

(3) दो महाकाव्यों के नाम तथा एक-एक रचना का नाम लिखिए।

(4) दो खण्डकाव्य कारों के नाम व एक-2 रचना का नाम लिखिए।

(5) वीभत्स रस का उदाहरण लिखिए।

(6) वीर रस की परिभाषा लिखिए।

(7) अनुभाव कितने प्रकार के होते हैं।

(8) अलंकार की परिभाषा लिखिए।

(9) अर्थालंकार का उदाहरण लिखिए।

(10) संदेह अलंकार का उदाहरण लिखिए।

(11) रस की निष्पत्ति में सहायक तत्वों के नाम लिखिए।

(12) बिंब-विधान का एक उदाहरण लिखिए।

(13) प्रसाद गुण का उदाहरण लिखिए।

MP BOARD OFFICIAL

(15) ... लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं (16) अभिधा व लक्षणा से हटकर विभिन्न अर्थ का बोध कराने वाली व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं। (17) सहृदय के हृदय में हास्य नामक स्थायी भाव का जब अनुभाव विभाव व संचारी भाव से संयोग होता है। हास्य रस होता है।

(14) रोला छंद की परिभाषा लिखिए।

(15) लक्षणा शब्द शक्ति किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(16) व्यंजना शब्द शक्ति किसे कहते हैं?

(17) हास्य रस परिभाषा लिखिए।

(18) छंद की परिभाषा लिखिए। (18) मात्रा, यति, गति, तुक, लय के विधान को छंद कहते हैं।

उत्तर- (1) खंड काव्य में केवल एक प्रमुख कथा रहती है, (2) बहुत बड़ा और विस्तृत काव्य ग्रंथ की रचना होती है, (3) रामायण वाल्मीकि, महाभारत, वेदव्यास, (4) पंचवटी मैथिलीशरण, कंसवध श्यामलाल पाठक, (5) सिर पर बैठो कागं आँखि दोउ-खात निकारत, (6) किसी रचना आदि से वीरता जैसे स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, (7) अनुभाव 4 प्रकार के होते है?, (8) अलंकार का शाब्दिक अर्थ होता है कि आभूषण काव्य की शोभा, (9) बड़े न हूजे गुनन सिनु, बिरद बड़ाई पाय। कहत धतूरे से कनक गहनो गढ़ो न जाय, (10) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है, (11) शृंगार, वात्सल्य, भक्ति रस, (12) गाते खग नव जीवन परिचय, तरु मलय वलय, (13) ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ते ही अर्थ ग्रहण हो जाते है, (14) रोला एक घन है। यह एकसम मात्रिक छंद है, (15) शब्द की वह शक्ति है जिसमें लक्ष्य प्रकट हो जैसे भारत का एक राज्य।, (16) शब्द के जिस व्यापार से मूख्य और लक्ष्य अर्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति, (17) किसी व्यक्ति वस्तु की असाधारण वेशभूषा आकति वाणी आदि को देखकर हृदय में जो हास का भाव उत्पन्न होता है। (18) मात्राओं का निश्चित मान जिनके अनुसार पद्य रचना की जाती है।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) कठोर वर्णों की आवृति माधुर्य गुण में होती है।

(2) लंबे-लंबे सामासिक पदों का प्रयोग ओज गुण में होता है।

(3) छंद में गणों की संख्या 9 होती है।

(4) मोहन बैल है में अभिधा शब्द शक्ति है।

(5) दधि मथि घृत काढि लियो में उपमा अलंकार है।

(6) तुम बरस लो वे ना बरसे में यमक अलंकार है।

(7) चित में उत्तेजना का संचार ओजगुण में होता है।

(8) साकेत हरिऔध का प्रमुख महाकाव्य है।

(9) एक शब्द की आवृति हो और अर्थ भी एक से हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

(10) जहाँ रस होता है वहाँ गुण होते हैं।

(11) पाँवो से पेट ढ़कना मार्मिक विम्ब योजना का प्रयोग ... जी ने किया है।

(12) गजल में सभी शेर अपने आप में मुकम्बल वह स्वतंत्र होते हैं।

(13) वक्रोक्ति अर्थ टेढ़ी उक्ति से है।

(14) दोहा और रोला छंद को मिला कर कुंडलियाँ छंद बनता है।

(15) रुबाइयाँ उर्दू फारसी की लेखन शैली है।

(16) दोहा को उल्टा करने पर रोला छंद बनता है।

(17) जल बिच मीन प्यासी में विशेषोक्ति अलंकार है।

(18) मोह और जडता संचारी भाव में आते है।

(19) विभाव दो प्रकार के होते हैं।

(20) जिन छंदों में मात्राओं की गणना हो उसे वर्णिक छंद कहते हैं।

(21) रस के 10 अंग है।

उत्तर- (1) असत्य, (2) असत्य, (3) असत्य, (4) असत्य, (5) असत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) असत्य, (9) सत्य, (10) सत्य, (11) सत्य, (12) सत्य, (13) सत्य, (14) सत्य, (15) सत्य, (16) असत्य, (17) असत्य, (18) सत्य, (19) सत्य, (20) असत्य, (21) असत्य।

MP BOARD OFFICIAL

लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महाकाव्य और खण्डकाव्य में अंतर लिखिए।

उत्तर- महाकाव्य जिसमें संर्गों का निबंधन हो वह महाकाव्य कहलाता है। महाकाव्य में देवता या सदृश क्षत्रिय जिसमें धीरोदात्तत्वादिगुण हो नायक होता है। कही एक वंश के अनेक सत्कुलीन भूप भी नायक होते है। शृंगार वीर और शांत में से कोई एक रस अंगी होता है। तथा अन्य सभी रस अंग रूप में होते है। खण्ड काव्य साहित्य में प्रबंध काव्य का एक रूप है। जीवन की किसी घटना विशेष को लेकर लिखा गया काव्य खण्ड काव्य है। जिसमें चरित नायक का जीवन सम्पूर्ण रूप में कवि को प्रभावित नहीं करता।

(1) महाकाव्य में पात्रों की संख्या अधिक होती है जबकि खंडकाव्य में पात्रों की संख्या सीमित होती है।

(2) महाकाव्य में अनेक छंदों का प्रयोग होता है जबकि खंडकाव्य में एक छंद का प्रयोग होता है।

प्रश्न 2. शब्दालंकार का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर- शब्दालंकार वे अलंकार है, जहां शब्द विशेष के ऊपर अलंकार की निर्भरता हो। शब्दालंकार मैं शब्द विशेष के प्रयोग के कारण ही कोई चमत्कार उत्पन्न होता है। उन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है जैसे वह बाँसुरी की धुनि कानि परै, कुल कानि हियो तजि भाजनि है।

प्रश्न 3. प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य में अंतर लिखिए।
उत्तर- प्रबंध काव्य व मुक्त काव्य में अन्तर इस प्रकार है
(1) प्रबंध काव्य में छंद एक कथासूत्र में पिरोए हुए होते है। जबकि मुक्त काव्य में छंद एक-दूसरे से स्वतंत्र होते हैं।
(2) प्रबंध काव्य में किसी एक व्यक्ति के जीवन चरित्र का वर्णन होता है जबकि मुक्त काव्य में किसी अनुभूति, कल्पना या भाव चित्रण होता है।

प्रश्न 4. वक्रोक्ति अलंकार की परिभाषा लिखिए।
उत्तर- जिस शब्द से कहने वाले व्यक्ति के कथन का अर्थात ग्रहण कर सुनने वाला व्यक्ति अन्य ही चमत्कारपूर्ण अर्थ लगाये और उसका उत्तर दे तब उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते है। दूसरे शब्दों में जहाँ किसी के कथन का कोई दूसरा पुरुष दूसरा अर्थ निकाले वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

प्रश्न 5. वक्रोक्ति अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।
उत्तर- जब बोलने वाले व्यक्ति के द्वारा बोले गए शब्दों का उसकी कंठ ध्वनि के कारण सुनने वाला व्यक्ति कुछ और अर्थ निकाले तब वहां पर वक्रोक्ति अलंकार होता है। मैं सुकुमारी नाथ बन जोगू। कह अंगद सलज्ज जग माही। रावण तोहि समान कोउ नाही।

प्रश्न 6. दोहा छंद की परिभाषा लिखिए।
उत्तर- दोहा अर्द्धसम मालिक छंद है। यह दो पंक्ति का होता है इसमें चार चरण माने जाते है। इसके विषम चरणों प्रथम तथा तृतीय में 13-13 मात्राएँ और समचरणों द्वितीय तथा चतुर्थ में 11-11 मात्राएँ होती है। विषम चरणों के आदि में प्राय जगण होता है।

प्रश्न 7. स्थाई भाव और व्यभिचारी भाव में अंतर लिखिए।
उत्तर- स्थायी भाव और व्यभिचारी भाव में इतना ही अंतर है कि स्थायी भाव चरम पर्यंत स्थिर रहता है। इसी से स्थायी कहलाता है। दूसरा अस्थिर होता है। इस प्रकार स्थायी भाव मनोविकार में प्रधान होता है। स्थायी भाव से रस का जन्म होता है जो भावना स्थिर और सार्वभौम होती है। रस की और वस्तु या विचार का नेतृत्व करती है उसे व्यभिचारी भाव कहते है।

प्रश्न 8. शब्द शक्ति से क्या तात्पर्य है किसी एक शब्द शक्ति का उदाहरण लिखिए।
उत्तर- जिस वाक्य का सामान्य अर्थ कोई महत्व रखे अथवा नहीं लेकिन वह वाक्य किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है। सामान्य शब्दों में यह शब्द शक्ति वहाँ प्रयुक्त होती है जहाँ वाक्य का लक्षण बताया जाता है। यहाँ उत्पन्न भाव को लक्ष्यार्थ कहा जाता है। उदाहरण- रामू शेर है।

प्रश्न 9. बिंब विधान योजना से क्या तात्पर्य है? किसी एक शब्द शक्ति का उदाहरण लिखिए।
उत्तर- ... मूर्तीकरण के लिए सटीक ... काव्य में विष... को वह शब्द चित्र माना जाता है जो कल्पना द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है। बिम्ब-विधान (इमेजरी) हिन्दी साहित्य में कविता की एक शैली है।

प्रश्न 10. यमक अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
उत्तर- सरल शब्दों में कहे तो जब एक ही शब्द काव्य में कई बार आये और सभी अर्थ अलग-अलग हो वहां यमक अलंकार होता है। उदा. उधौ जोग जोग हम नाही। उदाहरण खग-कुल-कुल बोल रहा। प्रस्तुत पंक्ति में कुल शब्द दो बार आया है।

इकाई 3. आरोह भाग-1

गद्य खण्ड

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1. 'रंगभूमि' रचना है-
(अ) मन्नू भंडारी (ब) प्रेमचंद
(स) शेखर जोशी (द) कृष्णा सोबती

2. नमक का दरोगा कहानी का प्रकाशन वर्ष है-
(अ) 1925 (ब) 1914 (स) 1934 (द) 1904

3. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को अपनी कहानी का आधार बनाने वाले कथाकार हैं-
(अ) प्रेमचंद (ब) जैनेंद्र
(स) शेखर जोशी (द) कृष्णनाथ

4. नमक की गाड़ियाँ जा रही थीं-
(अ) रामपुर (ब) नागपुर (स) कानपुर (द) श्यामपुर

5. कृष्णा सोबती की रचना है-
(अ) पंच परमेश्वर (ब) जिंदगीनामा
(स) पथेर पांचाली (द) पृथ्वी परिक्रमा

6. मियाँ नसीरुद्दीन शब्द चित्र कृष्णा सोबती के किस सं... से लिया गया है-
(अ) दिलोदानिश (ब) जिंदगीनामा
(स) हम हशमत (द) बादलों के घेरे

7. मियाँ नसीरुद्दीन कैसे इंसान का प्रतिनिधित्व करते हैं
(अ) चतुर इंसान का
(ब) त्याग शील इंसान का
(स) जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं
(द) जो अपने खानदान को बदनाम करते हैं

MP BOARD OFFICIAL

8. मियाँ नसीरुद्दीन कितने प्रकार की रोटियाँ बनाने के लिए मशूहर थे?
(अ) छत्तीस (ब) छियालीस
(स) छप्पन (द) छियासठ

9. 'काम करने से आता है, नसीहतों से नहीं' यह कथन किसका है?
(अ) लेखिका का (ब) मियाँ कल्लन का
(स) मीर साहिब का (द) मियाँ नसीरुद्दीन का

10. मियाँ नसीरुद्दीन के दादा जी का क्या नाम था?
(अ) मियाँ कल्लन (ब) मियाँ रहमत
(स) मीर साहिब (द) बहादुर शाह

11. 'अपू के साथ ढाई साल' पाठ गद्य की विधा है-
(अ) कहानी (ब) निबंध (स) रेखाचित्र (द) संस्मरण

12. 'पथेर पाँचाली' फिल्म की शूटिंग का काम कितने साल तक चला?
(अ) एक साल (ब) डेढ़ साल
(स) दो साल (द) ढाई साल

13. रेलवे लाइन के समीप वाला मैदान कौन-से फूलों से भरा हुआ था?
(अ) गुलाब (ब) काशफूल
(स) गेंदे (द) कमल

14. 'अपू के साथ ढाई साल' नामक संस्मरण किस फिल्म से संबंधित है?
(अ) अपराजिता (ब) पथेर पाँचाली
(स) देवी चारुलता (द) सद्गति

15. 'सोने का किला' किसकी रचना है?
(अ) सत्यजीत राय (ब) मुंशी प्रेमचंद
(स) कृष्णा सोबती (द) मन्नू भंडारी

16. 'विदाई संभाषण' किस विधा की रचना है?
(अ) निबंध (ब) व्यंग्य
(स) कहानी (द) भाषण

17. 'विदाई संभाषण' के लेखक हैं-
(अ) प्रेमचंद (ब) बालमुकुंद गुप्त
(स) लार्ड कर्जन (द) महावीर प्रसाद द्विवेदी

18. निम्न में से शेखर जोशी की रचना है-
(अ) चिट्ठे और खत (ब) कोसी का घटवार
(स) अपराजिता (द) कफन

19. शेखर जोशी की रचना नहीं है-
(अ) साथ के लोग (ब) दाज्यू
(स) दिलो दानिश (द) नौरंगी बीमार है

20. मास्टर त्रिलोक सिंह ने धनराम को कितने का पहाड़ा याद करने के लिए दिया था?
(अ) 12 (ब) 13 (स) 14 (द) 19

21. शेखर जोशी का जन्म कब हुआ था?
(अ) 1930 (ब) 1931 (स) 1932 (द) 1933

22. शेखर जोशी को कौन सा सम्मान मिला था?
(अ) पद्मश्री (ब) पहल सम्मान
(स) ज्ञानपीठ (द) साहित्य अकादमी

23. रमेश, मोहन को क्या समझता था?
(अ) भाई (ब) नौकर (स) मित्र (द) भतीजा

24. 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' यह कथन किसका है?
(अ) वंशीधर का (ब) धनराज का
(स) त्रिलोक सिंह का (द) रमेश का

25. 'उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी' यह कथन किसके लिए कहा गया है?
(अ) धनराम के लिए (ब) मोहन के लिए
(स) रमेश के लिए (द) वंशीधर के लिए

26. गलता लोहा कहानी में गोपाल सिंह कौन है?
(अ) दुकानदार (ब) सब्जीवाला
(स) गीतकार (द) अध्यापक

27. 'तुम्हारी फाइल पूर्ण हो गई है' में फाइल शब्द किस अर्थ में व्यक्त हुआ है?
(अ) चिकित्सा की फाइल (ब) जीवन की फाइल
(स) कार्यालयीन फाइल (द) पर्सनल फाइल

28. रजनी ने अमित के मुद्दे को गंभीरता से लिया, क्योंकि....
(अ) वह अमित से बहुत स्नेह करती थी
(ब) अमित उसकी मित्र लीला का बेटा था
(स) वह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की सार्मथ्य रखती थी।
(द) उसे अखबार की सुर्खियों में आने का शौक था।

29. अन्याय का डटकर मुकाबला करने की बात कहती है-
(अ) शीला (ब) रजनी (स) पाठक (द) लीला

30. मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'रजनी' मूलतः क्या है?
(अ) कथा (ब) पटकथा (स) एकांकी (द) नाटक

31. जामुन के पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति को सर्वप्रथम किसने देखा?
(अ) माली (ब) चपरासी (स) सेक्रेट्री (द) ज्वाइंट सेक्रेट्री

32. 'जामुन का पेड़' कैसी कथा है?
(अ) गंभीर (ब) हास्य व्यंग्य
(स) वीरता पूर्ण (द) इनमें से कोई नहीं

MP BOARD OFFICIAL

33. लेखक की नव प्रकाशित रचना का नाम क्या था?
(अ) ओस के फूल (ब) कमल के फूल
(स) बूंद के फूल (द) धूप के फूल

34. जामुन के पेड़ के नीचे दबा हुआ व्यक्ति पेशे से क्या था?
(अ) अध्यापक (ब) कवि (स) दुकानदार (द) माली

35. दबा हुआ आदमी कवि है, इसलिए फाइल का संबंध किस विभाग से माना गया है?
(अ) एग्रीकल्चर (ब) हॉर्टिकल्चर
(स) कल्चरल (द) प्रोफेशनल

36. पंचशील के सिद्धांत का प्रचार किया था-
(अ) प्रेमचंद (ब) जवाहरलाल नेहरू
(स) सैय्यद हैदर रजा (द) बालमुकुंद गुप्त

37. भारत माता पाठ 'हिंदुस्तान की कहानी' का अध्याय है-
(अ) दूसरा (ब) तीसरा (स) चौथा (द) पाँचवां

38. इस काल को जागरणसुधार काल भी कहा गया है-
(अ) भारतेंदु युग (ब) द्विवेदी युग
(स) शुक्ल युग (द) शुक्लोत्तर युग

39. "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।" यह कथन है-
(अ) बाबू गुलाब राय (ब) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(स) महावीर प्रसाद द्विवेदी (द) डॉ. नगेंद्र

40. सामान्यतः कहानी के तत्व स्वीकार किए जाते हैं-
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

41. "घटनात्मक इकहरे चित्रण का नाम कहानी है।" कहानी की परिभाषा दी है-
(अ) श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकर (ब) मुंशी प्रेमचंद
(स) रवीद्र नाथ टैगोर (द) चंद्रधर शर्मा गुलेरी

उत्तर- (1) (ब), (2) (अ), (3) (अ), (4) (स), (5) (ब), (6) (स), (7) (स), (8) (स), (9) (द), (10) (अ), (11) (द), (12) (द), (13) (ब), (14) (ब), (15) (अ), (16) (ब), (17) (ब), (18) (ब), (19) (द), (20) (ब), (21) (स), (22) (ब), (23) (ब), (24) (स), (25) (ब), (26) (अ), (27) (ब), (28) (स), (29) (ब), (30) (ब), (31) (अ), (32) (ब), (33) (अ), (34) (ब), (35) (अ), (36) (ब), (37) (द), (38) (ब), (39) (ब), (40) (स), (41) (स)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थान में सही शब्द चुनकर लिखिए-

(1) मासिक वेतन को ..... का चाँद कहा गया है। (पूर्णिमा/अमावस्या)

(2) पंडित अलोपीदीन का ..... पर अखण्ड विश्वास था। (सरस्वती/लक्ष्मी)

(3) डॉ. नगेंद्र ने ..... को पुनर्जागरण काल कहा है। (भारतेंदु युग/द्विवेदी युग)

(4) अंधेर नगरी ..... की प्रतिद्ध रचना है। (भारतेंदु हरिश्चंद्र/बालकृष्ण भट्ट)

(5) ..... युग को निबंध का स्वर्ण काल माना जाता है। (द्विवेदी युग/शुक्ल युग)

(6) मियां नसीरुद्दीन के पिता का नाम ..... था। (मियां शराफत/मियां कल्लन)

(7) मियां नसीरुद्दीन अखबार बनाने वाले और पढ़ने वाले को ..... समझते थे। (कामकाजी/निठल्ला)

(8) पथेर पाँचाली फिल्म की भाषा ..... है। (हिंदी/बांग्ला)

(9) जिंदगीनामा प्रसिद्ध ..... है। (कहानी/उपन्यास)

(10) मियां नसीरुद्दीन ..... के मसीहा थे। (नानबाइयों के/नवाबों के)

(11) पापड़ से भी अधिक महीन ..... रोटी होती है। (बेसनी/तुनकी)

(12) अपू की भूमिका निभाने के लिए ..... वर्ष के लड़के की आवश्यकता थी। (पाँच/छः)

(13) अपू की भूमिका निभाने वाले लड़के का नाम ..... था। (सुबीर बनर्जी/सुधीर मुखर्जी)

(14) इस पाठ का भाषांतर ..... ने किया है। (सत्यजीत राय/विलास गिते)

(15) 'विदाई संभाषण' व्यंग्य ..... पर लिखी गई रचना है। (लॉर्ड मैकाले/लॉर्ड कर्जन)

(16) ..... बालमुकुंद गुप्त जी के लिए स्वाधीनता संग्राम का हथियार थी। (राजनीति/पत्रकारिता)

(17) 'विदाई संभाषण' चर्चित व्यंग्य ..... का अंश है। (शिवशंभु के चिट्ठे/चिट्ठे और खत)

(18) बिछड़न समय ..... होता है। (करुणोत्पादक/हास्योत्पादक)

(19) वंशीधर ने मोहन को पढ़ने के लिए ..... के साथ लखनऊ भेजा। (रमेश/सुरेश)

(20) बचपन से ही ..... बड़ा बुद्धिमान था। (मोहन/धनराम)

(21) धनराम ..... का काम करता था। (सोनार का/लोहार का)

(22) रजनी के पति का नाम ..... था। (सूरज/रवि)

(23) रजनी ने हेड मास्टर से ..... छोड़ने कि बात की। (घर/कुर्सी)

MP BOARD OFFICIAL

2022/11/10

(24) रजनी ..... विधा है। (पटकथा/कहानी)
(25) रजनी पाठ के अनुसार शिक्षा ..... बनती जा रही है। (बोझ/व्यवसाय)
(26) 'एक गिरजा-ए-खंदक' रचना ..... की है। (कृश्नचंदर/कृष्णनाथ)
(27) शेखर जोशी की कहानी ..... पर चिल्ड्रन फिल्म सोसायटी फिल्म का निर्माण हुआ। (हलवाहा/दाज्यू)
(28) कृश्नचंदर का ..... से गहरा संबंध है। (प्राचीन लेखक संघ/प्रगतिशील लेखक संघ)
(29) भारत ..... शब्द है। (अंग्रेजी/संस्कृत)
(30) 'खैबर दर्रा' ..... दिशा में है। (उत्तर-पश्चिम/दक्षिण-पूर्व)
(31) नेहरू जी का जन्म ..... में हुआ। (1988/1989)
(32) चाचा नेहरू का जन्म दिवस ..... के रूप में मनायया जाता है। (शिक्षक दिवस/बाल दिवस)
(33) अतीत के अनुभावों और प्रभावों को शब्द के माध्यम से जब अभिव्यक्ति मिलती है तो उसे ..... कहा जाता है। (रेखाचित्र/संस्मरण)
(34) रेखाचित्र की विधा ..... से मिलती-जुलती है। (आत्मकथा/संस्मरण)
(35) कहानी हिंदी गद्य की ..... विधा है। (मुख्य/गौण)
(36) नाटक एवं एकांकी ..... विधा है। (श्रव्य/दृश्य)
(37) संकलन त्रय ..... विधा में आवश्यक है। (उपन्यास/एकांकी)

उत्तर- (1) पूर्णिमा, (2) लक्ष्मी, (3) भारतेन्दु युग, (4) भारतेंदु हरिश्चंद्र, (5) द्विवेदी युग, (6) मियां शराफत, (7) निट्टल्ला, (8) बांग्ला, (9) उपन्यास, (10) नानबाइयों के, (11) तुनकी, (12) छः, (13) सुबीर बनर्जी, (14) विलास गिते, (15) लॉर्ड कार्जन, (16) पत्रकारिता, (17) शिवशंभु के चिट्ठे, (18) करुणोत्पादक, (19) रमेश (20) मोहन, (21) लोहार का, (22) रवि, (23) कुर्सी, (24) पटकथा, (25) व्यवसाय, (26) कृश्णचंदर, (27) दाज्यू, (28) प्रगतिशील लेखक संघ, (29) संस्कृत, (30) उत्तर-पश्चिम, (31) 1989, (32) बालदिवस, (33) सस्मरण, (34) संस्मरण, (35) मुख्य, (36) दृश्य, (37) एकांकी।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाकर लिखिए-

स्तम्भ-(अ)	स्तम्भ-(अ)
(1) रजनी	(क) आत्मकथा
(2) बादलों के घेरे	(ख) नमक का दारोगा
(3) अपू के साथ ढाई साल	(ग) जवाहरलाल नेहरू
(4) मेरी कहानी	(घ) पटकथा
(5) विश्व इतिहास की झलक	(च) कहानी
(6) मियां नसीरुद्दीन	(छ) कृष्णा सोबती
(7) धन पर धर्म की जीत	(ज) लेख
(8) शेखर जोशी	(झ) हास्य व्यंग्य कथा
(9) गलता लोहा	(ट) व्यंग्य लेख
(10) जामुन का पेड़	(ठ) संस्मरण
(11) भारत माता	(ड़) शब्द चित्र
(12) सूरजमुखी अंधेरे में	(ढ़) देवी चारुलता
(13) विदाई संभाषण	(ण) कृष्णा सोबती
(14) प्रेमचंद	(त) रजनी
(15) सत्यजीत राय	(थ) फिल्म निर्देशक
(16) जालमुकुंद गुप्त	(द) कायाकल्प
(17) शिक्षा का व्यवसायीकरण	(ध) याज्ञवल्क्य
(18) मन्नू भंडारी	(न) नौरंगी बीमार है
(19) शेखर जोशी	(प) शिवशंभू के चिट्ठे
(20) गोंगा पिकासो	(फ) फ्रेंच चित्रकार
(21) ब्राह्मण	(ब) भारतेंदु हरिश्चंद
(22) कवि वचन सुधा	(भ) अयोध्यासिंह उपाध्याय
(23) मतवाला	(म) बालकृष्ण भट्ट
(24) हिंदी प्रदीप	(य) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
(25) कर्मवीर	(र) भारतेन्दु

उत्तर- (1) (घ), (2) (च), (3) (ठ), (4) (क), (5) (ड़) (6) (छ), (7) (द), (8) (ट), (9) (ज), (10) (झ), (11) (ग), (12) (ण), (13) (म), (14) (ख), (15) (थ), (16) (प), (17) (ढ़), (18) (त), (19) (ब), (20) (च), (21) (ध), (22) (ब), (23) (भ), (24) (र), (25) (य)।

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर लिखिए-

(1) वंशीधर ने किससे बैर मोल लिया था? धन
(2) पंडित अलोपीदीन ने मुंशी वंशीधर को किस पद पर नियुक्त किया था?
(3) उपन्यास एवं कहानी विधा का काल विभाजन किसके नाम के आधार पर पर किया गया?
(4) नमक का दरोगा कहानी के अंत में किसकी जीत हुई?
(5) गोदान उपन्यास एवं पूस की रात कहानी किस प्रकार की रचना है? यथार्थवादी
(6) मियां नसीरुद्दीन के खानदान का पैसा क्या था? नानबाई
(7) 'तालीम की तालीम बड़ी चीज हैं' यह कथन किसका है?
(8) पथेर पाँचाली फिल्म में मिठाई बेचने वाले का नाम क्या था?
(9) अपू की माँ का क्या नाम था? सर्वजया

MP BOARD OFFICIAL

(10) 'भारत मित्र' के संपादक का नाम लिखिए।
(11) किस शब्द की शुद्धता को लेकर बालमुकुंद गुप्त जी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी जी से लंबी बहस की थी?
(12) भारतेंदु युग और द्विवेदी युग के बीच की कड़ी किसे कहा जाता है?
(13) 'खेल तमाशा 'किसकी रचना है?
(14) 'गलता लोहा' गद्य की कौन सी विधा है?
(15) रमेश, मोहन को अपने साथ कहाँ ले गया था?
(16) धनराम के पिता का व्यवसाय क्या था?
(17) मोहन के गुरु का क्या नाम था?
(18) जामुन के पेड़ के नीचे दबे आदमी ने किसका शेर सुनाया था?
(19) डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन से रजनी किस की शिकायत करती है?
(20) रजनी पटकथा का पात्र अमित सक्सेना कौन-सी कक्षा में पढ़ता है?
(21) जामुन का पेड़ कहाँ गिरा था?
(22) भारत की चर्चा नेहरू जी कब और किससे करते थे?
(23) उपन्यास एवं कहानी सम्राट के नाम से कौन प्रसिद्ध हैं?
(24) महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका का संपादन कार्य कब से प्रारंभ किया?
(25) द्विवेदी युग के प्रवर्तक का नाम लिखिए।
(26) भारतेंदु युग के प्रवर्तक का पूरा नाम लिखिए।
(27) आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का प्रारंभ किस युग से माना जाता है?
(28) 'हिंदी साहित्य की भूमिका 'ग्रंथ के लेखक कौन हैं?
(29) हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रथम लेखक कौन था?
(30) हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास कौन सा है?
(31) 'कलम का सिपाही' रचना किस विधा में लिखी गई।
(32) चिंतामणि किसका निबंध संग्रह है?

उत्तर- (1) पंडित अलोपीदीन, (2) मैनेजर, (3) प्रेमचंद, (4) धन के ऊपर धर्म की जीत की है, (5) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, (6) रोटियाँ बनाना, (7) नसीरुद्दीन, (8) श्रीनिवास, (9) दुर्गा, (10) पण्डित हरमुकुन्द शास्त्री, (11) अनस्थिरता, (12) महावीर प्रसाद द्विवेदी, (13) बालमुकुंद गुप्त, (14) प्रतिविधि नमूना, (15) लखनऊ, (16) लोहारी, (17) मास्टर त्रिलोक सिंह, (18) ओरा का, (19) मिस्टर पाठक की, (20) 7वीं, (21) सचिवालय के पार्क में, (22) जलसों में किसानों और श्रोताओं से, (23) प्रेमचन्द्र, (24) 1903 से, (25) महावीर प्रसाद द्विवेदी, (26) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (27) 13वीं शताब्दी से 1922 तक, (28) हजारी प्रसाद द्विवेदी, (29) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, (30) चंद्रकाता, (31) जीवनी गद्य विधा, (32) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) मुंशी वंशीधर के पिता उन्हें ईमानदारी का पाठ पढ़ाते थे।
(2) नमक का दरोगा कहानी के अँत में धन की जीत हुई।
(3) प्रेमचंद का कहानी संग्रह मानसरोवर आठ खंडों में विभक्त है।
(4) न्याय के मैदान धर्म और धन के बीच युद्ध ठन गया।
(5) मियां नसीरुद्दीन ने पंच हजारी अंदाज में सिर हिलाया।
(6) अपू की माँ उसे रोटी-सब्जी खिला रही थी।
(7) पथेर पांचाली फिल्म के एक सीन में तीन अलग-अलग रेलगाड़ियों का इस्तेमाल किया गया है।
(8) पथेर पांचाली फिल्म सन् 1955 में प्रदर्शित हुई।
(9) पथेर पांचली फिल्म के लेखक सत्यजित राय हैं।
(10) विदाई संभाषण लॉर्ड कर्जन की प्रशंसा में लिखी गई रचना है।
(11) बालमुकुंद गुप्त राष्ट्रीय नवजागरण के सक्रिय पत्रकार थे।
(12) 'विदाई संभाषण' में भारतीयों की बेबसी, दुख एवं लाचारी को व्यंगात्मक ढंग से लॉर्ड कर्जन की लाचारी से जोड़ने की कोशिश की गई है।
(13) शेखर जोशी की कहानियाँ 'नई कहानी आंदोलन' के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं।
(14) गलता लोहा पाठ के लेखक शेखर जोशी हैं।
(15) मोहन मास्टर त्रिलोक सिंह का चहेता शिष्य था।
(16) आठवीं कक्षा की पढ़ाई के बाद मोहन को तकनीकि स्कूल में भर्ती कराया गया।
(17) 'एक पेड़ की याद' शेखर जोशी का शब्द चित्र संग्रह है।
(18) रजनी पटकथा में शिक्षा के व्यवसायीकरण की समस्या को केंद्र में रखा गया है।
(19) रजनी पटकथा में मिस्टर पाठक गणित विषय के शिक्षक हैं।
(20) रजनी पटकथा में कुल सात दृश्य हैं।
(21) जामुन का पेड़ कृश्नचंदर का एक प्रसिद्ध संस्मरण है।
(22) काव्यात्मक रोमानियत और शैली की विविधता लेखक कृश्नचंदर की लोकप्रियता के मुख्य कारण हैं।
(23) किसान सामान्यत: भारत माता का अर्थ धरती से लेते थे।
(24) नेहरू जी के आलेख 'भारत माता' का अंग्रेजी भाषांतर हरिभाऊ उपाध्याय ने किया।
(25) संस्मरण स्मृति पर आधारित होता है।
(26) जयशंकर प्रसाद को हिंदी में हिंदी में नाटक सम्राट कहा जाता है।

MP BOARD OFFICIAL

(27) पत्र साहित्य का शिल्प लेखक की अपनी निजी क्षमता, संवेदना और कला पर निर्भर करता है।
(28) सन 1900 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित श्री किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती' कहानी को प्रथम कहानी माना गया है।
(29) हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, एवं ज्ञान चतुर्वेदी व्यंग्य निबंधकार हैं।
(30) गद्य का परिमार्जित रूप 1920 के बाद गंभीरता तथा विशिष्ट शैली के साथ प्रस्तुत हुआ।
(31) पंडित प्रताप नारायण मिश्र शुक्लोत्तर युग के निबंधकार हैं।

उत्तर- (1) सत्य, (2) असत्य, (3) सत्य, (4) सत्य, (5) सत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) सत्य, (10) असत्य, (11) सत्य, (12) असत्य, (13) सत्य, (14) सत्य, (15) सत्य, (16) सत्य, (17) सत्य, (18) सत्य, (19) सत्य, (20) सत्य, (21) सत्य, (22) सत्य, (23) सत्य, (24) असत्य, (25) सत्य, (26) असत्य, (27) सत्य, (28) सत्य, (29) सत्य, (30) सत्य, (31) असत्य।

लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मुंशी वंशीधर ने अपना मित्र और पथ प्रदर्शक किसे बनाया?

उत्तर- इस संसार में व्यक्ति के जीवन संघर्ष में धैर्य, बुद्धि, आत्मावलम्बन ही क्रमशः मित्र, पथ प्रदर्शक व सहायक का काम करते है। हर व्यक्ति अकेला होता है। उसे स्वयं ही कुछ करना व पाना होता है।

प्रश्न 2. पंडित अलोपीदीन की गाड़ियां कहां, क्यो और किसने रोकी थी?

उत्तर- पंडित अलोपीदीन की गाड़ियां नमक के दरोगा वंशीधर ने रोकी थी क्योंकि उन्हें शक था कि कोई रात में नमक की कालाबाजारी कर रहा है।

प्रश्न 3. पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर को अपनी सारी जायदाद का स्थाई मैनेजर क्यों नियुक्त किया?

उत्तर- कहानी के अन्त में अलोपीदीन ने वंशीधर को मैनेजर नियुक्त कर दिया। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-
(1) अलोपीदीन स्वयं भ्रष्ट था, परन्तु उसे अपनी जायदाद को सँभालने के लिए ईमानदार व्यक्ति की जरूरत थी। वंशीधर उसकी दृष्टि में योग्य व्यक्ति था।
(2) अलोपीदीन आत्मग्लानि से पीड़ित था। उसे ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ की नौकरी छिनने का दुःख था। मैं इस कहानी का अंत इस प्रकार करता-ग्लानि से भरे अलोपीदीन वंशीधर के पास गए और वंशीधर के समक्ष ऊँचे वेतन के साथ मैनेजर पद देने का प्रस्ताव रखा। यह सुन वंशीधर ने कहा-यदि आपको अपने किए पर ग्लानि हो रही है, तो अपना जुर्म अदालत में कबूल कर लीजिए। अलोपीदीन ने वंशीधर की शर्त मान ली। अदालत ने सारी सच्चाई जानकर वंशीधर को नौकरी पर रखने का आदेश दिया। वंशीधर सेवानिवृत्ति तक ईमानदारीपूर्वक नौकरी करते रहे। सेवानिवृत्ति के उपरांत अलोपीदीन ने वंशीधर को अपने समस्त कार्यभार के लिए मैनेजर नियुक्त कर लिया।

प्रश्न 4. नमक का दरोगा कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर- हमें इस कहानी का पात्र वंशीधर सबसे अधिक प्रभावित करता है। वह ईमानदार, शिक्षित कर्तव्यपरायण व धर्मनिष्ठ व्यक्ति है। उसके पिता ने उसे बेईमानी का पाठ पढ़ाया, घर की दयनीय दशा का हवाला दिया है। परन्तु इन सबके विपरीत उसने ईमानदारी का व्यवहार किया। वह स्वाभिमानी था। अदालत में उसके खिलाफ गलत फैसला लिया गया, परन्त उसने स्वाभिमान नहीं खोया। उसकी नौकरी छीन ली गई। कहानी के अन्त में उसे अपनी ईमानदारी का फल अवश्य मिला। पंडित अलोपीदीन ने उसे अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त कर दिया।

प्रश्न 5. मिया नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- मिया नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व की दो विशेषताएं वे बड़े ही बातूनी और अपने मुंह मिया मिट्ठू बनने वाले बुजुर्ग थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही साधारण सा था, पर वे बड़े मसीहाई अंदाज में रोटी पकाते थे स्वभाव उनके स्वभाव में रूखाई अधिक और स्नेह कम था। वे सीख और तालीम के विषय में बड़े स्पष्ट थे।

प्रश्न 6. नानबाई किसे कहते है?

उत्तर- नानबाई वह कार्य होता है जिसमें कई तरह की रोटियाँ बनाने और बेचने का काम किया जाता है। मियाँ ने नानबाई का काम किया, क्योंकि यह उनका खानदानी पेशा था।

प्रश्न 7. पथेर पांचाली फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?

उत्तर- 'पथेर पांचाली' फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक चलने के निम्नलिखित कारण थे-
(1) लेखक के पास पैसे का अभाव था।
(2) वह विज्ञापन कम्पनी में काम करता था। इसलिए काम में फुर्सत होने पर ही लेखक तथा अन्य कलाकार फिल्म का काम कर पाते थे।
(3) तकनीक के पिछड़ेपन के कारण पात्र, स्थान, दृश्य आदि समस्याएँ आ जाती थीं।

MP BOARD OFFICIAL

प्रश्न 8. भूलों की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया? उसने फिल्म के किस दृश्य को पूरा किया?

उत्तर- भूलो की मृत्यु हो गई थी, अतएव उससे मिलता-डुलता कुत्ता लाया गया। फिल्म का दृश्य इस प्रकार था कि अपू की माँ उसे भात खिला रही थी। अपू तीर-कमान से खेलने के लिए उतावला है। भात खाते-खाते वह तीर छोड़ता है तथा उसे लाने के लिए भाग जाता है। माँ भी उसके पीछे दौड़ती है। भूलो कुत्ता वहीं खड़ा सब कुछ देख रहा है। उसका ध्यान भात की थाली की ओर है। यहाँ तक का दृश्य पहले भूलो कुत्ते पर फिल्माया गया था। इसके बाद के दृश्य में अपू की माँ बचा हुआ भात गमले में डाल देती है और भूलो वह भात खा जाता है। यह दृश्य दूसरे कुत्ते से पूरा किया गया।

प्रश्न 9. बारिश का दृश्य चित्रित करने में क्या मुश्किल आई और उसका समाधान किस प्रकार हुआ?

उत्तर- फिल्मकार के पास पैसे का अभाव था, अत: बारिश के दिनों में शूटिंग नहीं कर सके। अक्टूबर माह तक उनके पास पैसे एकत्र हुए, तो बरसात के दिन समाप्त हो चुके थे। शरद ऋतु में बारिश होना भाग्य पर निर्भर था।

लेखक हर रोज अपनी टीम के साथ गाँव में जाकर बैठे रहते और बादलों की ओर टकटकी लगाकर देखते रहते। एक दिन अचानक बादल छा गए और घुआँधार बारिश होने लगी। फिल्मकार ने इस बारिश का पूरा फायदा उठाया और दुर्गा और अपू का बारिश में भीगने वाला दृश्य शूट कर लिया।

प्रश्न 10. लार्ड करजन कैसा वायसराय था?

उत्तर- वह भारत में नियुक्त होने वाले सबसे कम उम्र के वायसराय थे और उन्होंने 1899 से 1905 के बीच वायसराय के रूप में कार्य किया। वह औपनिवेशिक सरकार के सबसे प्रभावशाली और सबसे विवादित वायसराय में से एक थे। भारत का वायसराय बनने के पूर्व भी कर्जन चार बार भारत आ चुका था।

प्रश्न 11. भारत में वायसराय लार्ड कर्जन का शासन कबसे कब तक था?

उत्तर- लॉर्ड कर्जन ने लॉर्ड एल्गिन के कार्यकाल के उपरांत पदभार ग्रहण किया तथा कर्जन वर्ष 1899 से 1905 तक ब्रिटिश भारत के वायसराय रहे। वह 39 वर्ष की आयु में भारत के सबसे कम उम्र के वायसराय बने।

प्रश्न 12. शिवशंभु के दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर- लेखक ने शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से यह कहना चाहा है कि भारत में मनुष्य तो मनुष्य, पशुओं में भी अपने साथ रहने वालों के प्रति लगाव होता है। वे स्वयं को दुख पहुँचाने वाले व्यक्ति के बिछुड़ने पर भी दुखी होते हैं। शिवशंभु की मारने वाली गाय के जाने पर दुर्बल गाय ने चारा नहीं खाया। यहाँ बिछुड़ते समय वैर-भाव को भुला दिया जाता है। विदाई का समय करुणा उत्पन्न करने वाला होता है।

प्रश्न 13. लॉर्ड कर्जन को इस्तीफा क्यों देना पड़ गया?

उत्तर- कर्जन को इस्तीफा निम्नलिखित कारणों से देना पड़ा -

(1) कर्जन ने बंगाल विभाजन लागू किया। इसके विरोध में सारा देश खड़ा हो गया। कर्जन द्वारा राष्ट्रीय ताकतों को खत्म करने का प्रयास विफल हो गया। उलटे ब्रिटिश शासन की जड़ें हिल गई।

(2) कर्जन इंग्लैण्ड में एक फौजी अफसर को इच्छित पद पर नियुक्त करवाना चाहता था। उसकी सिफारिश को नहीं माना गया। उसने इस्तीफे की धमकी से काम करवाना चाहा। परन्तु ब्रिटिश सरकार ने उसका इस्तीफा भी मंजूर कर लिया।

प्रश्न 14. 'विदाई संभाषण' रचना में देश के किस शासनकाल का वर्णन किया गया है?

उत्तर- विदाई- संभाषण उनकी सर्वाधिक चर्चित व्यंग्य कृति शिवशंभु के चिट्ठे का एक अंश है। यह पाठ वायसराय कर्जन (जो 1899-1904 एवं 1904-1905 तक दो बार वायसराय रहे, के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है)।

प्रश्न 15. लार्ड कर्जन के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- लार्ड कर्जन के व्यक्तित्व की 2 विशेषताएँ निम्न है-

(1) संस्थाओं पर सरकार का अधिक से अधिक कठोर नियंत्रण होना चाहिए एवं प्राइमरी शिक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए। कर्जन का विचार था कि भारत की शिक्षा संस्थाएं मुख्यतया विश्वविद्यालय राजनीतिक दल बन्दियों अथवा षडयंत्रों के केन्द्र बन गये थे।

(2) कर्जन भारत में ऐसे प्रशासनिक कार्य करना चाहता था जिससे भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ें और अधिक मजबूत हो सके। उसके प्रसासन की मुख्य विशेषता थी कार्यकुशलता। उसके द्वारा सम्पादित किए गए प्रशासनिक कार्य पूर्णत: प्रतिक्रियावादी थे।

प्रश्न 16. बालमुकुन्द गुप्त ने देश को "अभागे भारत"! क्यों कहा है?

उत्तर- लेखक बालमुकुंद गुप्त ने लॉर्ड कर्जन की विदाई के समय कहा कि भारत ऐसा देश है जहाँ विदाई का दुख मनुष्यों को तो होता ही है उसी प्रकार पशु-पक्षियों को भी होता है

MP BOARD OFFICIAL

2022/11/10 08:3

लेकिन लॉर्ड कर्जन भारतीयों की इस सहानुभूति को भी न पा सके।

प्रश्न 17. वंशीधर तिवारी कौन थे? उन्होंने जीवन भर कैसे आजीविका चलाई?

उत्तर- वंशीधर तिवारी मोहन के पिता थे। उन्होंने जीवनभर पुरोहिती कर दान दक्षिणा के बूते पर अपनी जीविका चलाई। गलत लोहा पाठ में वंशीधर तिवारी मोहन के पिता थे। उन्होंने साधारण हैसियत वाले यजमानों को पुरोहिताई करके उनसे मिली दान-दक्षिणा के बूते पर अपने परिवार का पेट पाला यानि अपनी आजीविका चलाई।

प्रश्न 18. अध्यापक त्रिलोकसिंह एवं लोहार गंगाराम के दंड देने के क्या-क्या ढंग थे?

उत्तर- अध्यापक त्रिलोक सिंह और गंगाराम के दंड देने का ढंग अलग अलग था। जहाँ मास्टर त्रिलोक सिंह दंड देने के लिए अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट देते थे, वहीं गंगाराम दंड देने के लिए बेंत का चुनाव स्वयं करते थे। गंगाराम के हाथ में जो कुछ भी पड़ जाता था, वह उससे ही दंड देने की शुरुआत कर देते थे।

प्रश्न 19. ''बिरादरी का यही सहारा होता है'' यह कथन किसने किससे कहा?

उत्तर- यह कथन मोहन के पिता वंशीधर ने युवक रमेश से कहा।

प्रश्न 20. रजनी संपादक से क्या सहायता मांगती है?

उत्तर- रजनी ने संपादक को ट्यूशन की समस्या की खबर अखबार में छपने का आग्रह किया। उसने यह भी निवेदन किया कि 25 तारीख की पेरेंट्स मीटिंग की खबर भी प्रकाशित करें। इससे सब लोगों तक खबर पहुँच जाएगी।

प्रश्न 21. शुक्ल युग के दो प्रमुख निबंधकार एवं उनकी रचना लिखिए।

उत्तर- हिन्दी निबंध के विकास की गति में तीसरे मोड़ का श्रेय रामचन्द्र शुक्ल को निबंधों के संग्रह चिंतामणि को है। इसने पाठकों के समक्ष नवीन विचार, नव अनुभूति एवं नई शैली उपस्थित की। इस युग के निबंधकार जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंद पंत है।

जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ कामायनी, ममता
सुमित्रानंद पंत की रचनाएँ सत्यकाम, चिंदबरा।

प्रश्न 22. पटकथा किसे कहते हैं?

उत्तर- पटकथा किसी फिल्म या दूरदर्शन कार्यक्रम के लिए पटकथा लेखक द्वारा लिखा गया कच्चा चिट्ठा होता है। यह मूल रूप से भी लिखा जा सकता है और किसी उपन्यास या कहानी के लिए भी तैयार किया जा सकता है। इसमें संवाद और संवादों के बीच होने वाली घटनाओं व दृश्यों का विस्तृत ब्योरा होता है। इसे अंग्रेजी में स्कीनप्ले कहा जाता है।

प्रश्न 23. रजनी पटकथा पढ़कर आपको क्या संदेश मिलता है?

उत्तर- (1) रजनी उन्हें संगठित होकर आन्दोलन चलाने की सलाह दे रही थी ताकि इस अन्याय का पर्दाफाश हो सके।
(2) रवि की इस बात से उसकी उदासीन प्रवृत्ति का पता चलता है। वह समाज में होने वाले अन्याय को देखकर कोई प्रतिक्रिया नहीं करता। वह स्वार्थी है तथा अपने तक ही सीमित रहता है।

प्रश्न 24. संवेदनशील मामलों में बड़े अफसरों की राय लेना कहाँ तक ठीक है? लिखिए।

उत्तर- संवेदनशील मामलों में बड़े अफसरों की राय लेना अधिक उपयुक्त है क्योंकि बड़े अफसर अनुभवी और जानकार होते है।

प्रश्न 25. मनचले क्लर्क किस समस्या को स्वयं हल करना चाहते थे?

उत्तर- कुछ मनचले क्लर्क सरकारी इजाजत के बिना पेड़ हटाना चाहते थे तभी सुपरिटेंडेंट फाइल लेकर भागा-भागा आया और कहा कि यह काम कृषि विभाग का है। वह उन्हें फाइल भेज रहा है। कृषि विभाग ने पेड़ हटवाने की जिम्मेदारी व्यापार विभाग पर डाल दी। व्यापार विभाग ने कृषि विभाग पर जिम्मेदारी डालकर अपना पल्ला झाड़ लिया।

प्रश्न 26. कृषि विभाग वालों ने मामले को हार्टिकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिए?

उत्तर- कृषि विभाग वालों ने मामले को हॉर्टीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे तर्क दिए कि कृषि विभाग अनाज तथा खेती बाड़ी के विषय से संबंधित मामलों में फैसला करता है। वह फलदार वृक्ष के मामले में फैसला नहीं कर सकता है। अत: यह एग्रीकल्चर के स्थान पर हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आएगा।

प्रश्न 27. दबा हुआ आदमी एक कवि भी है, यह बात कैसे पता चली।

उत्तर- सेक्रेटेरियट के लॉन में खड़ा जामुन का पेड़ रात की आँधी में गिर गया। इसके नीचे एक आदमी दब गया। उसे बचाने के लिए एक सरकारी फाइल बनी। वह एक विभाग से दूसरे विभाग में घूमने लगी। माली ने उस आदमी को हिम्मत दिलाते हुए उसे खिचड़ी खिलाई और कहा कि उसका मामला ऊपर तक पहुँच गया है। तब उस व्यक्ति ने आह भरते हुए गालिब का शेर पढ़ा।

MP BOARD OFFICIAL

"ये तो माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक!"

माली ने उससे पूछा है कि क्या आप शायर हैं? उसने 'हाँ' में सिर हिलाया। फिर माली ने यह बात क्लर्कों को बताई। इस प्रकार यह बात सारे शहर में फैल गई। सेक्रेटेरियट में शहर-भर के कवि व शायर इकट्ठे हो गए। फाइल कल्चर डिपार्टमेंट को भेजी गई। वहाँ का सचिव उस व्यक्ति का इंटरव्यू लेने आया और उसे अकादमी का सदस्य बना दिया किंतु, यह कहकर कि पेड़ के नीचे से निकालने का काम उसके विभाग का नहीं है वह फाइल वन-विभाग को भेजी गई इससे पेड़ हटाने या काटने की अनुमति मिलने का रास्ता खटाई में पड़ गया।

प्रश्न 28. नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन सा प्रश्न बार-बार करते थे?

उत्तर- नेहरू जी भारत के सभी किसानों से निम्नलिखित प्रश्न बार-बार करते थे- (1) वे 'भारत माता की जय' से क्या समझते हैं? (2) यह भारत माता कौन है? (3) वह धरती कौन-सी है जिसे वे भारत माता कहते हैं-गाँव की, जिले की, सूबे की या पूरे हिंदुस्तान की?

प्रश्न 29. भारत माता के प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी?

उत्तर- भारत माता के प्रति नेहरू जी की यह अवधारणा थी कि यहाँ की धरती, पहाड़, जंगल, नदी, खेत आदि के साथ-साथ यहाँ के करोड़ों लोग भी भारत माता हैं। भारत जितना भी हमारी समझ में था उससे भी परे जितना है, उससे कहीं अधिक व्यापक है। 'भारत माता की जय' से मतलब यहाँ के लोगों की जय से है।

प्रश्न 30. भारतेन्दु युग की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- भारतेन्दु हरिशचन्द्र से हिन्दी कविता का आधुनिक काल प्रारंभ होता है। सन् 1857 के विद्रोह ने राष्ट्रीयता की तीव्र लहर फैला दी थी। परिणामस्वरूप नये विचार, नयी भाषा और नयी शैली का काव्य में प्रयोग किया गया। भारतेन्दु-युग के कवियों में राष्ट्रीयता और देश-प्रेम का तीव्र स्वर सुनाई पड़ता है। इस युग के प्रमुख कवि हैं- पं. अंबिकाप्रसाद व्यास, पं. प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी, भारतेन्दु हरिशचन्द्र आदि।

प्रश्न 31. द्विवेदी युग की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- द्विवेदी युग के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है- **1. द्विवेदी युग-** युग के काव्य में राष्ट्रीयता और सामाजिकता की प्रवृत्ति अधिक तीव्र थी। (2) इस युग में खड़ी बोली का काव्य में प्रयोग हुआ। (3) इस युग के काव्य पर स्वतंत्रता आंदोलन और गाँधीवादी विचारधारा का विशेष प्रभाव पड़ा। (4) 'प्रियप्रताप' और 'साकेत' इस युग के प्रमुख महाकाव्य हैं। (5) इस युग के प्रमुख कवि हैं- मैथिलीशरण गुप्त श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', गोपालशरण सिंह, रामनरेश त्रिपाठी आदि।

प्रश्न 32. शुक्ल युग को निबन्ध काल का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है?

उत्तर- शुक्ल युग हिन्दी निबन्ध का उत्कर्ष काल है इस काल में भाषा, शैली, गम्भीरता, चिन्तन, मौलिकता आदि प्रत्येक क्षेत्र में निबन्ध-विधा परिष्कार को प्राप्त हुई इसीलिए शुक्ल युग को हिन्दी निबन्ध का उत्कर्ष काल कहा जाता है।

प्रश्न 33. भारतेन्दु युग के दो प्रमुख निबंधकार एवं उनके निबंध लिखिए।

उत्तर- भारतेन्दु- युग के प्रसिद्ध निबन्धकार हैं- भारतेन्दु हरिशचन्द्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', पं. बालमुकुन्द गुप्त आदि।

भारतेन्दुजी के निबन्ध ने भी अनेक विषयों पर 'काश्मीर कुसुम' उदयपुरोदय, 'कालचक्र' 'बादशाह' 'दर्पण' ऐतिहासिक 'वैद्यनाथ धाम' 'हरिद्वार', 'सरयू पार की यात्रा' विवरणात्मक, 'कंकण स्तोत्र; व्यंग्यपूर्ण वर्णनात्मक और 'नाटक', 'वैष्णवता और भारत वर्ष' विचारात्मक निबन्ध है।

प्रश्न 34. रेखाचित्र से आप क्या समझते है?

उत्तर- इसे अंग्रेजी भाशा में स्केच (Sketch) कहते हैं। जिस प्रकार कोई चित्रकार अपनी तूलिका से चित्र बनाता है, उसी प्रकार रेखा चित्रकार अपने शब्दों के रंगों के द्वारा ऐसे चित्र उपस्थित करता है, जिससे वर्णन योग्य वस्तु की आकृति का चित्र हमारी आँखों के सामने घूमने लगता है।

प्रश्न 35. रेखाचित्र एवं संस्मरण में अंतर लिखिए।

उत्तर- संस्मरण- संस्मरण का अर्थ है- सम्यक स्मरण। इसमें लेखक स्वयं अपनी अनुभूति किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना का आत्मीयता तथा कलात्मकता के साथ विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें व्यक्ति के किसी एक पक्ष का उद्घाटन होता है। वस्तुतः संस्मरण एक घटना प्रधान गद्य रचना है, जिसमें प्रिय या श्रद्धेय व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण या जीवन की झाँकी होती है।

रेखाचित्र- इसे अंग्रेजी भाषा में स्केच (Sketch) कहते हैं। जिस प्रकार कोई चित्रकार अपनी तूलिका से चित्र बनाता है, उसी प्रकार रेखा चित्रकार अपने शब्दों के रंगों के द्वारा ऐसे चित्र उपस्थित करता है, जिससे वर्ण योग्य वस्तु की आकृति का चित्र हमारी आंखों के सामने घूमने लगता है।

MP BOARD OFFICIAL

प्रश्न 36. जीवनी तथा आत्मकथा में अंतर लिखिए।

उत्तर- जीवनी :- जीवनी या जीवन चरित्र व्यक्ति के जीवन का लिखित वृतान्त होता है। इसमें किसी महान व्यक्ति के जीवन का समग्र चित्रण किया जाता है।

आत्मकथा :- आत्मकथा किसी व्यक्ति की स्वयं लिखित जीवन गाथा है। इसमें लेखक आत्म परीक्षण एवं आत्म परिष्कार करना चाहता है। वह अपने अनुभवों को दुनिया के लोगों को बाँटना चाहता है।

प्रश्न 37. कहानी और उपन्यास में अंतर लिखिए-

उत्तर- उपन्यास- उपन्यास का अर्थ है- सामने रखना। डॉ. भागीरथ मिश्र के शब्दों में, "युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है।"

मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार, "मैं उपन्यास मानव-जीवन का चित्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोजना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"

कहानी- कहानी संसार के लिखित अथवा अलिखित साहित्य का सबसे प्राचीनतम रूप है। कहानी को 'कथा' और आख्यायिका' भी कहते हैं। कहानी पढ़ने या सुनने की प्रकृति केवल बालकों में ही नहीं, अपितु वयस्कों में भी होती है। आज के व्यस्त जीवन में कहानी की लोकप्रियता अत्यधिक बढ़ गई है।

प्रश्न 38. नाटक एवं एकांकी में अंतर लिखिए।

उत्तर- नाटक और एकांकी में निम्नलिखित अंतर है-

(1) नाटक का कथानक बड़ा होता है, जबकि एकांकी का कथानक छोटा होता है। (2) नाटक में तीन से अधिक अंक होते हैं, परंतु एकांकी में केवल एक अंक होता है, जिसमें कुछ दृश्य होते हैं। (3) नाटक में पात्रों की संख्या अधिक रहती है, जबकि एकांकी में पात्रों की सीमित रहती है। (4) नाटक दर्शकों पर अनेक प्रभाव डालता है, परन्तु एकांकी दर्शकों के मन पर एक ही प्रभाव डालता है। यह प्रभाव सजीव और अधिक गहरा होता है।

कवि परिचय

प्रश्न - 1. प्रेमचन्द एवं कृष्णा सोबती का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए-
(अ) दो रचनाएँ (ब) भाषा शैली (स) साहित्य में स्थान।

प्रेमचन्द

1. जीवन-परिचय- मुंशी प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 ई. में उत्तर प्रदेश के लमही नामक गाँव में हुआ। इनका मूल नाम धनपतराय था। इनका बचपन अभावों में बीता। इन्होंने स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद पारिवारिक समस्याओं के कारण बी.ए. तक की पढ़ाई मुश्किल से पूरी की। ये अंग्रेजी में एम.ए. करना चाहते थे, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए नौकरी करनी पड़ी। ये शिक्षा विभाग में डिप्टी इन्सपेक्टर बन गए। गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय होने के कारण उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ने के बाद भी उनका लेखन-कार्य सुचारू रूप से चलता रहा। इन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की थी। ये अपनी पत्नी शिवरानी देवी के साथ अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलनों में हिस्सा लेते रहे। इनके जीवन का राजनीतिक संघर्ष इनकी रचनाओं में सामाजिक संघर्ष बनकर सामने आया, जिसमें जीवन का यथार्थ और आदर्श दोनों थे। इनका निधन सन् 1936 ई. में हुआ।

2. रचनाएँ- प्रेमचंद का साहित्य संसार अत्यन्त विस्तृत हैं। ये हिन्दी कथा-साहित्य के शिखर पुरुष माने जाते हैं। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

उपन्यास- सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि।

कहानी-संग्रह- सोजे-वतन, मानसरोवर (आठ खंड में), गुप्त धन।

नाटक- कर्बला, संग्राम, प्रेम की देवी।

निबन्ध-संग्रह- कुछ विचार, विविध प्रसंग।

3. साहित्यिक विशेषताएं- वस्तुत: प्रेमचंद ही पहले रचनाकार है जिन्होंने कहानी और उपन्यास की विधा को कल्पना और रूमानियत के धुँधलके से निकालकर यथार्थ की ठोस जमीन पर प्रतिष्ठित किया। यथार्थ की जमीन से जुड़कर कहानी किस्सागोई तक सीमित न रहकर पढ़ने-पढ़ाने की परम्परा से भी जुड़ी। इसमें उनकी हिन्दुस्तानी भाषा अपने पूरे ठाट-बाट और जातीय स्वरूप के साथ प्रयुक्त हुई है।

उनका आरम्भिक कथा-साहित्य कल्पना, संयोग और रूमानियत के ताने-बाने से बुना गया है, लेकिन एक कथाकार के रूप में उन्होंने लगातार विकास किया और पंच परमेश्वर जैसी कहानी तथा सेवासदन जैसे उपन्यास के साथ सामाजिक जीवन को कहानी का आधार बनाने वाली यर्थाथवादी कला के अग्रदूत के रूप में सामने आए। यथार्थवाद के भीतर भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से आलोचनात्मक यथार्थवाद तक की विकास-यात्रा प्रेमचंद ने की। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद स्वयं उन्हीं की गढ़ी हुई संज्ञा है। सेवासदन, प्रेमाश्रय आदि उपन्यास और पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा आदि कहानियाँ ऐसी ही हैं। बाद की रचनाओं में वे कटु यथार्थ को भी प्रस्तुत करने में किसी तरह का समझौता नहीं करते। गोदान उपन्यास और पूस की रात, कफन आदि कहानियाँ इसके उदाहरण है।

MP BOARD OFFICIAL

4. साहित्य में स्थान- मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में एक महान कहानीकार और उपन्यास सम्राट के रूप में चिर स्मरणीय रहेंगे।

कृष्णा सोबती

1. जीवन परिचय- प्रसिद्ध कहानी लेखिका कृष्णा सोबती का जन्म 1925 ई. में पाकिस्तान के गुजरात नामक स्थान पर हुआ। इनकी शिक्षा लाहौर, शिमला व दिल्ली में हुई। इन्हें साहित्य अकादमी सम्मान, हिन्दी अकादमी का शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

2. रचनाएँ- कृष्णा सोबती ने अनेक विधाओं में लिखा उनके कई उपन्यासों, लम्बी कहानियों और संस्मरणों ने हिन्दी के साहित्यक संसार में अपनी दीर्घजीवी प्रस्तुति दी है। इनकी रचनाएँ निम्नानुसार हैं-

उपन्यास- जिंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम।

कहानी-संग्रह- डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अंधेरे के।

शब्दचित्र, संस्मरण- हम-हशमत, शब्दों के आलोक में आदि।

3. साहित्यिक परिचय- हिन्दी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है। उनके संयमित लेखन और साथ-सुथरी रचनात्मकता ने अपना एक नित नया पाठक वर्ग बनाया है। उन्होंने हिन्दी साहित्य को कई ऐसे यादगार चरित्र दिए हैं, जिन्हें अमर कहा जा सकता है; जैसे- मित्रो, शाहनी, हशमत आदि। यह कहना उचित होगा कि यशपाल के झूठा-सच, राही मासूम रजा के आधा गाँव और भीष्म साहनी के तमस के साथ-साथ कृष्णा सोबती का जिन्दगीनामा इस प्रसंग में विशिष्ट उपलब्धि है। संस्मरण के क्षेत्र में हम-हशमत कृति का विशिष्ट स्थान है। इसमें उन्होंने अपने ही एक-दूसरे व्यक्तित्व के रूप में हशमत नामक चरित्र का सृजन कर एक अद्भुत प्रयोग का आदर्श प्रस्तुत किया है। आपने हिन्दी की कथा-भाषा में एक विलक्षणता जगा दी है। संस्कृतनिष्ठ तत्समता, उर्दू का बाँकपन, पंजाबी की जिंदादिली, ये सब एक साथ उनकी रचनाओं में विद्यमान है।

4. साहित्य में स्थान- एक श्रेष्ठ कहानी लेखिका, उपन्यास लेखिका व संस्मरण लेखिका के रूप में कृष्णा सोबती हिन्दी साहित्य में सदैव स्मरणीय रहेगी। आपकी शैली आकर्षक व सर्वथा नूतन है। आप अपनी रचनाओं द्वारा नया पाठक वर्ग तैयार कर हिन्दी साहित्य की महती सेवा में संलग्न हैं।

प्रश्न 2. सत्यजित राय एवं बालमुकुंद गुप्त का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए-
(अ) दो रचनाएँ (ब) भाषा शैली (स) साहित्य में स्थान

सत्यजित राय

1. जीवन परिचय- सत्यजित राय का जन्म कोलकाता में सन् 1921 ई. में हुआ। इन्होंने भारतीय सिनेमा को कलात्मक ऊँचाई प्रदान की। इनके निर्देशन में पहली फीचर फिल्म पथेर पांचाली (बांग्ला) 1955 में प्रदर्शित हुई। इससे उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इन्होंने फिल्मों के द्वारा केवल फिल्म विधा को समृद्ध नहीं किया, बल्कि इस माध्यम के बारे में निर्देशकों और आलोचकों के बीच एक समझ विकसित करने में भी अपना योगदान दिया।

इनके कार्यों को देखते हुए इन्हें कई पुरस्कार मिले। इन्हें फ्रांस का लेजन डी ऑनर, पूरे जीवन की उपलब्धियों पर ऑस्कर और भारत रत्न सहित फिल्म जगत का हर महत्वपूर्ण सम्मान मिला। इनकी मृत्यु सन् 1992 ई. में हो गई।

2. रचनाएँ- सत्यजित राय फिल्म निर्देशक तो थे ही, वे बाल व किशोर साहित्य भी लिखते थे। इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं- प्रो. शंकु के कारनामे, सोने का किला, जहाँगीर की स्वर्ण मुद्रा, बादशाही अँगूठी आदि।

प्रमुख फिल्में- अपराजिता, अपू का संसार, जलसाघर, देवी चारुलता, महानगर, गोपी गायेन बाका बायेन, पथेर पांचाली (बांग्ला), शतरंज के खिलाड़ी, सद्गति (हिन्दी)।

3. साहित्यिक विशेषताएँ- सत्यजित राय ने तीस के लगभग फीचर फिल्में बनाईं। इनकी ज्यादातर फिल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित है। इनके पसंदीदा साहित्यकारों में बांग्ला के विभूति भूषण बंद्योपाध्याय से लेकर हिन्दी के प्रेमचंद तक शामिल है। फिल्मों के पटकथा-लेखन, संगीत-संयोजन एवं निर्देशन के अतिरिक्त इन्होंने बांग्ला में बच्चों और किशोरों के लिए लेखन का काम भी बहुत निष्ठा के साथ किया है। इनकी कहानियों में जासूसी रोमांच के साथ-साथ पेड़-पौधे तथा पशु-पक्षियों कां सहज संसार भी मिलता है।

4. साहित्य में स्थान- भारतीय सिनेमा को कलात्मक ऊंचाई प्रदान करने में सत्यजित राय का विशिष्ट स्थान है। आप ने बाल-साहित्य का सृजन कर एक अच्छे साहित्यकार होने का परिचय दिया। एक महान् कलाकार के रूप में आप सदा स्मरणीय रहेंगे।

बालमुकुंद गुप्त

1. जीवन परिचय- बालमुकुंग गुप्त का जन्म सन् 1865 ई. में हरियाणा के रोहतक जिले के गुड़ियानी गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम लाला पूरनमल था। इनकी आरम्भिक शिक्षा गाँव में ही उर्दू भाषा में हुई। इन्होंने हिन्दी बाद में सीखी। इन्होंने मिडिल कक्षा तक पढ़ाई की, परन्तु स्वाध्याय से काफी ज्ञान

MP BOARD OFFICIAL

अर्जित किया। ये खड़ी बोली और आधुनिक हिन्दी साहित्य को स्थापित करने वाले लेखकों में से एक थे।

इन्होंने कई अखबारों का सम्पादन किया। उर्दू के दो पत्रों 'अखबार-ए-चुनार' तथा 'कोहेनूर' का भी सम्पादन किया। बाद में हिन्दी के समाचार-पत्रों 'हिन्दुस्तान' 'हिन्दी-बंगवासी', 'भारत मित्र' आदि का सम्पादन किया। इनका देहावसान सन् 2907 ई. में हुआ।

2. रचनाएँ- इनकी रचनाएँ पांच संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं- शिवशंभु के चिट्ठे, चिट्ठे और खत, खेल तमाशा, गुप्त निबंधावली, स्फुट कविताएँ।

3. साहित्यिक परिचय- गुप्त जी भारतेंदु युग और द्विवेदी युग के बीच की कड़ी के रूप में थे। ये राष्ट्रीय नवजागरण के सक्रिय पत्रकार थे। उस दौर के अन्य पत्रकारों की तरह वे साहित्य-सृजन में भी सक्रिय रहे। पत्रकारिता उनके लिए स्वाधीनता-संग्राम का हथियार थी। यही कारण है कि उनके लेखन में निर्भीकता पूरी तरह विद्यमान है।

इनकी रचनाओं में व्यंग्य-विनोद का भी पुट दिखाई पड़ता है। इन्होंने बांग्ला और संस्कृत की कुछ रचनाओं के अनुवाद भी किए। वे शब्दों के अद्‌भुत पारखी थे।

4. साहित्य में स्थान- बालमुकुन्द गुप्त एक सफल पत्रकार, निर्भीक लेखक और व्यंग्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य में सदैव अविस्मरणीय रहेंगे।

प्रश्न 3. मन्नू भंडारी एवं शेखर जोशी का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए -

(अ) दो रचनाएँ (ब) भाषा शैली (स) साहित्य में स्थान

मन्नू भंडारी

1. जीवन-परिचय- मन्नू भंडारी का जन्म सन् 1931 ई. में मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ। इनका मूल नाम महेन्द्र कुमारी था। इनकी आरंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। उन्होंने एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। इन्होंने कोलकाता तथा दिल्ली के मिरांडा हाऊस में प्राध्यापिका के पद पर कार्य किया। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया। इन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली के शिखर सम्मान, बिहार सरकार, कोलकाता की भारतीय भाषा परिषद्, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

2. रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।

उपन्यास- आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ)।

पटकथाएँ- रजनी, निर्मला, स्वामी, दर्पण।

3. साहित्यिक विशेषताएँ- मन्नू भंडारी हिंदी कहानी में उस समय सक्रिय हुई, जब नई कहानी आंदोलन अपने शिखर पर था। उनकी कहानियों में कहीं पारिवारिक जीवन, कहीं नारी-जीवन और कहीं समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियाँ विशेष आत्मीय अंदाज में अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने आक्रोश, व्यंग्य और संवेदना को मनोवैज्ञानिक रचनात्मक आधार दिया है- वह चाहे कहानी हो, उपन्यास हो या फिर पटकथा ही क्यों न हो। उसका मानना है कि-

"लोकप्रियता कभी भी रचना का मानक नहीं बन सकती। असली मानक तो होता है रचनाकार का दायित्वबोध, उसके सरोकार, उसकी जीवन दृष्टि।"

4. साहित्य में स्थान- आधुनिक कहानीकारों व उपन्यास लेखकों में मन्नू भंडारी का विशिष्ट स्थान है। आपकी रचनाएँ मनोवैज्ञानिक आधार लिए हैं। पट-कथा-लेखन में आपकी प्रतिभा स्तुत्य है।

शेखर जोशी

1. जीवन परिचय- शेखर जोशी का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा नगर में सन् 1932 ई. में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। बीसवीं सदी के छठे दशक में हिन्दी कहानी में बड़े परिवर्तन हुए। इस समय का साथ कई युवा कहानीकारों ने परम्परागत तरीके से हटकर नई तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू की।

इस नए उठान को 'नई कहानी आन्दोलन' नाम दिया। इस आन्दोलन में शेखर जोशी का स्थान अन्यतम है। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें पहल सम्मान प्राप्त हुआ।

2. रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी-संग्रह- कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है आदि।

शब्दचित्र-संग्रह- एक पेड़ की याद।

इनकी कहानियाँ कई भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, पोलिश और रूसी में भी अनूदित हो चुकी है। इनकी प्रसिद्ध कहानी 'दाज्यू' पर चिल्ड्रंस फिल्म का निर्माण भी हुआ है।

3. साहित्यिक परिचय- शेखर जोशी की कहानियाँ नई कहानी आन्दोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज का मेहनतकश और सुविधाहीन वर्ग इनकी कहानियों में स्थान पाता है। निहायत सहज एवं आडंबरहीन भाषा-शैली में वे सामाजिक यथार्थ के बारीक पहलुओं को पकड़ते और प्रस्तुत करते हैं। इनके रचना-संसार में समकालीन जनजीवन की बहुविध विडम्बनाओं को महसूस किया जा सकता है।

4. साहित्य में स्थान- नई कहानी के लेखकों में शेखर जोशी का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा।

MP BOARD OFFICIAL

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्या लिखिए-

(1) 'नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना, जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है, और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्त्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती हैं। वेतन मनुष्य देता है, इसी में उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है। तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।''

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह की बहुचर्चित कहानी नमक का दरोगा। से लिया गया है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद्र है।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश में प्रेमचंद्र ने बताया है कि वृद्ध तथा अनुभवी परन्तु लालची पिता आमदनी वाले पद के लिए फल को उकसाते है।

व्याख्या- वंशीधर ने पुत्र को बताया नौकरी में ऊँचे पद को मत देखना क्योंकि पद मजार के समान सम्मानीय है पर आमदनी का साधन नहीं होता इसलिए पद से प्राप्त आमदनी पर नजर रखना। पद चाहे छोटा या परन्तु धन प्राप्ति का साधन हो जिससे परिवार की दशा सुधर जाए। वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है। जिस प्रकार पूर्णमासी को चाँद पूर्ण गोल होता है परन्तु धीरे-धीरे घटते हुए अपने अस्तित्व को खो देता है। उसी प्रकार वेतन एक दिन चन्द्रमा जैसा मिलता है परन्तु व्यय करते-करते समाप्त हो जाता है।

(2) 'पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे-ही-लेटे गर्व से बोले- चलो, हम आते हैं। यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए, फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले- बाबू जी, आशीर्वाद! कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गई। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए। वंशीधर रुखाई से बोले-सरकारी हुक्म!''

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह की बहुचर्चित कहानी नमक का दरोगा से लिया गया है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद्र है।

प्रसंग- मुंशी वंशीधर ने पं. अलोपीदीन की नमक से भरी गाड़ियों के साथ जो पुल के पार जा रही थी। पकड़ ली तथा पंड़ित जी को बुलाया पं. अलोपीदीन ने पैसे के माध्यम से इस घटना का हल निकालना चाहा। इस घटना का बड़ा सटीक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या- पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर अर्द्धनिद्रा में गाड़ियों के साथ पुल पार कर रहे थे। तथा उन्हें गाड़ियों के पकड़े जाने का संदेश मिला परन्तु पं. तनिक भी वही घबराए क्योंकि उनका विश्वास था। कि धन की रिश्वत देकर दरोगा साहब को प्रसन्न कर दूँगा जिससे गाड़ियाँ छूट जाएँगी। पं. जी को पूर्ण भरोसा था कि धन से पृथ्वी के देवता तो क्या स्वर्ग के देवता को भी मनाया जा सकता है लक्ष्मी का सर्वव्यापी राज्य है। उनके इस कथन में शत-प्रतिशत सच्चाई थी। आज के इस भौतिकतावादी संसार में धन ही सब कुछ है। धन से ही न्याय का पक्ष जीता जा सकता है तथा धन ही आदर्श है। समस्त संसार का ही गुलाम है तथा धन के संकेत पर ही नाचता है।

(3) ''दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह में यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया।

इस कथन के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि संसार में परनिंदा हर समय होती रहती है। रात के समय हुई घटना की चर्चा आग की तरह सारे शहर में फैल गई। हर आदमी मजे लेकर यह बात एक-दूसरे को बता रहा था।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठय-पुस्तक आरोह की बहुचर्चित कहानी नमक का दरोगा से लिया गया है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद्र है।

प्रसंग- पं. अलोपीदीन को हिरासत में वंशीधर ने ले लिया है। यह समाचार चारों ओर फैल गए जिस कारण प्रात: काल अलोपीदीन की निंदा हो रही थी। जो स्वयं भ्रष्ट थे वे भी आज संत बनकर पं. अलोपीदीन की बुराई कर रहे थे।

व्याख्या- पं अलोपीदीन अपने को बन्दी की स्थित में अनुभव करके बेहोश हो गए। यह रात का समय था, सभी नगरवासी गहरी नींद में सो रहे थे। चारो ओर सन्नाटा था परन्तु पं. जी के बुरे कर्मों की चर्चा व्यापक रूप में फैल गई थी। उस चर्चा को सुनकर ऐसा लगता था मानों अब बुराई काले कारनामों की चर्चा का अंत हो गया है। प्रात: काल होते ही सब लोग पंडित जी के काले कारनामों की चर्चा कर रहे थे। सब लोग बुराई करने में लगे थे। चाहे आलोचना करने वाले स्वयं कितने भी भ्रष्ट थे। किन्तु वे सभी पं. अलोपीदीन की बुराई कर रहे थे।

MP BOARD OFFICIAL

(4) मियाँ नसीरुद्दीन हमारी ओर कुछ ऐसे देखा कि उन्हें हमसे जवाब पाना हो फिर बड़े ही मँजे अंदाज में कहा 'कहने का मतलब साहिब यह कि तालीम की तालीम भी बड़ी चीज होती है।' आखिर एक दिन हुआ भी वैसा ही। शरद ऋतु में भी आसमान में बादल छा गए और धुआँधार बारिश शुरू हुई। उसी बारिश में भीगकर दुर्गा भागती हुई आई और उसने पेड़ के नीचे भाई के पास आसरा लिया। भाई-बहन एक-दूसरे से चिपक कर बैठे।

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह के प्रसिद्ध शब्द-चित्र मियाँ नसीरूद्दीन शीर्षक से अवतरित है। जिसकी लेखिका हिंदी कथा साहित्य में विशिष्ट स्थान रखने वाली कृष्णा सोबती है।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका नसीरूद्दीन और उनके बीच होने वाले वार्तालाप के एक रोचक अंश का वर्णन किया है।

व्याख्या- लेखिका द्वारा मियाँ नसीरूद्दीन से यह पूछने पर कि उन्होंने अपने वालिद से किस प्रकार रोटी बनाने का हुनर सीखा तो नरीरूद्दीन इस प्रश्न के उत्तर में लेखिका की ओर ताकने लगे मानो इस प्रश्न का जवाब भी लेखिका से ही पाना चाह रहे हो। अचानक से वह बड़े विनोदपूर्ण स्वर में बोले कि बिना आधारभूत ज्ञान प्राप्त किये कोई पूर्ण ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकता है? उन्होंने कहाँ कि किसी भी कार्य को सीखने का क्रम क्रमिक ही होता है। उन्होंने भी रोटी बनाने सीखने से पहले बर्तन धोना, भट्ठी बनाना, भट्ठी को आँच देना जैसी आधारभूत चीजें सीखी और तब जाकर उनके वालिद ने उन्हें रोटी बनाना सिखाया। वह आगे कहते है कि शिक्षा की शिक्षा प्राप्त करना भी एक बड़ी बात होती है। एक बार बारिश के समय में दुर्गा भागती हुई आई और अपने भाई के पास गई उसका भाई पेड़ के पास में खड़ा था वर्षा अधिक होने से पेड़ के नीचे खड़े होने पर पानी नहीं लगता है। इसलिए दोनों भाई बहिन पेड़ के नीचे बैठ गए।

(5) बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। आपको बिछड़ते देखकर आज हृदय में बड़ा दुख है। माइ लार्ड! आपके दूसरी बार इस देश में आने से भारतवासी किसी प्रकार प्रसन्न न थे। वे यही चाहते थे कि आप फिर ना आवे। पर आप आए और उससे यहाँ के लोग बहुत ही दुखित हुए। वे दिन-रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान यहाँ से पधारे।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह के सर्वाधिक चर्चित व्यंग्य लेख विदाई- संभाषण से उद्धृत है जिसके लेखक राष्ट्रीय नव जागरण के सक्रिय पत्रकार बालमुकुंद गुप्त है।

प्रसंग- किसी भी व्यक्ति का वियोग अर्थात् बिछड़ना मन में दु:ख उत्पन्न करता है। यही वात लॉर्ड कर्जन के भारत से विदा होते समय भारतीयों के मन में उत्पन्न हुई।

व्याख्या- लॉर्ड कर्जन दो बार भारत के वायसराय बने पहली बार में उन्होंने ब्रिटिश सरकार के भारत में पैर मजबूत करने के लिए भारतीयों का शोषण किया अनुचित कानून बनाए। प्रेस की स्वतंत्रता नष्ट कर दी। अत: भारतीय नहीं चाहते थे कि लॉर्ड कर्जन दुबारा आएँ परन्तु वे आए जिस कारण भारतीय दुखी थे। भारतीय भगवान से प्रार्थना करते थे कि लॉर्ड कर्जन लौट जाए। सामान्य रूप से पधारने का अर्थ सम्मानपूर्वक आगमन का होता हैं परन्तु लेखक ने व्यंग्य के साथ पधारे शब्द का प्रयोग किया जिसका भाव था। चले जाएँ।

(6) आप बहुत धीर-गंभीर प्रसिद्ध थे। उस सारी धीरता-गंभीरता का आपने इस बार कौंसिल में बेकानूनी कानून पास करते और कन्वोकेशन वक्तृता देते समय दिवाला निकाल दिया। यह दिवाला तो इस देश में हुआ। उधर विलायत में आपके बार-बार इस्तीफा देने की धमकी ने प्रकाश कर दिया कि जड़ हिल गई है।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह के सर्वाधिक चर्चित व्यंग्य लेख विदाई संभाषण से अद्धृत है जिसके लेखक राष्ट्रीय नव जागरण के सक्रिय पत्रकार बालमुकुद गुप्त है।

प्रसंग- यहाँ पर लेखक ने लॉर्ड कर्जन के गुण बताए है पर उन्होंने उन गुणों का सद्उपयोग न करके दुर-उपयोग किया जिससे वे स्वयं कमजोर हो गए। उनको भारत में जो सम्मान मिला था अपमान में बदल गया।

व्याख्या- लॉर्ड कर्जन का भारत में बहुत प्रभाव था क्योंकि विलायत व भारत में उनके बड़ा धैर्यवान शान्त स्वभाव व बुद्धिमान माना जाता था लेकिन 1904 में दुबारा भारत आने पर कर्जन ने अपनी चारित्रिक विशेषताओं का प्रयोग कौंसिल में अन्यायपूर्ण कानून वंगाल का विभाजन बनाने में किया। साथ ही दीक्षान्त समारों में दिए गए भाषण में भारतीयों के विरूद्ध बोले इस कारण वे भारत में शक्तिहीन व कंगल हो गए। लॉर्ड कर्जन ने अपने को प्रभावशाली दिखाने व शक्तिशाली दिखाने के लिए ऐसे निर्णय लिए जो उनकी मानसिक कमजोरी बताते थे।

(7) पीढ़ियों से चले आते पैतृक धंधे ने उन्हें निराश कर दिया था। दान-दक्षिणा के बूते पर वे किसी तरह परिवार का आधा पेट भर पाते थे। मोहन पढ़-लिख कर वंश का दारिद्रय मिटा दे यह उनकी हार्दिक इच्छा थी। लेकिन इच्छा होने भर से ही सब कुछ नहीं हो जाता।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्याश हमारी पाठय-पुस्तक आरोह की प्रतिनिधि कहानी गलता लोहा से अवतरित है। इसके लेखक नई कहानिक आन्दोलन को प्रतिभा शाली लेखक शेखर जोशी है।

MP BOARD OFFICIAL

प्रसंग- मोहन के पिता वंशीधर पुत्र को पढ़ा लिखाकर अधिकारी बनाना चाहते थे क्योंकि मोहन एक मेधावी छात्र था तथा अपने जीवन का निर्वाह बड़ी कठिनाई से किया था। इसलिए वह चाहते थे कि पुत्र पढ़-लिखकर घर की गरीबी को दूर करे।

व्याख्या- वे पुरोहिताई करके तथा थोड़ा-बहुत खेत-खलिहान का काम करके गृहस्थी का खर्चा चला रहे थे। दान-दक्षिणा की आय से केवल पेट भर रहा था। परन्तु कोई सुख-साधन नहीं था। इस कारण उनको अपने धन्धे से बड़ी निराशा होती थी। उधर उनकी आयु भी ढलती जा रही थी। वह पुत्र को उच्च शिक्षा दिलाकर एक अफसर बनाना चाहते थे। अफसर बनकर पुत्र परिवार के अभावपूर्ण जीवन को दूर कर सके। यही उनकी इच्छा थी और इसी इच्छा के कारण पुत्र को दूर पढ़ने भेजा। इच्छा करने से सब कुछ प्राप्त नहीं होता और न मनुष्य को सभी इच्छाएँ पूरी होती है। व्यक्ति का जीवन भविष्य पर निर्भर होता है।

(8) धनराम की संकोच, असमंजस और धर्म-संकट की स्थिति से उदासीन मोहन संतुष्ट भाव से अपने लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई को जांच रहा था। उसने धनराम की ओर अपनी कारीगरी की स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी जिसमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार-जीत का भाव।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह की प्रतिनिधि कहानी गलता लोहा से अवतरित है। इसके लेखक नई कहानी आन्दोलन को प्रतिभा शाली लेखक शेखर जोशी है।

प्रसंग- धनराम एक छड़ को गोलाई में नहीं मोड़ पा रहा है तो मोहन संकोच त्यागकर हथौड़ा धौंकनी की सहायता से छड़ को गोल कर देता है। धनराम यह सब देखकर अवाक रह जाता है।

व्याख्या- धनराम मोहन के इस कार्य को भय और शंका की दृष्टि से देखने लगा लखनऊ में रहते हुए उसने सीख लिया था कि अपनी ऊँची बिरादरी की तुलना में एक निम्नवर्ग के मेहनतकश व्यक्ति के साथ काम करना अच्छा होता है। मोहन को लुहार का कार्य करता देखकर धनराम के मन में झिझक दुविधा तथा क्या करूँ की स्थिति थी परन्तु मोहन का मन शान्त था। अपने बने सुन्दर छल्ले में की गई कारिगारी को देख रहे था। उसकी इच्छा थी कि धनराम मोहन की कार्य कुशलता की प्रशंसा करे। उसकी आँखे एक प्रकार की सद्कार्य करने वाले की आँखों जै[illegible] रही थी और दूसरी और धनराम के मन में मोहन [illegible]सी भी प्रकार की ईर्ष्या नहीं थी और न हार-जीत का [illegible] अब जातिगत आधार पर बने झूठे भाई-चारे का लोहा [illegible] रहा था। उसके स्थान पर मेहनत कश का सच्चा भाईचारा [illegible] रहा था।

(9) शाम के पाँच बजे स्वयं सुपरिंटेंडेंट कवि की फा[illegible] लेकर उसके पास आया, "सुनते हो!" आते ही वह खु[illegible] से फाइल को हिलाते हुए चिल्लाया, "प्रधानमंत्री ने इस पे[illegible] को काटने का हुक्म दे दिया, और इस घटना की सार[illegible] अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारी अपने सिर ले ली है। कल यह पे[illegible] काट दिया जाएगा और तुम इस संकट से छुटकारा हासि[illegible] कर लोगे।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठय पुस्तक आरोह की हा[illegible] व्यंग्य कथा जामुन का पेड़ से अवतरित है। इस कथा के लेख[illegible] प्रेमचंद्र के उत्तराधिकारी कृश्नचंदर है।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने बताया है कि पेड़ की नी[illegible] दबा आदमी मर गया परन्तु उसकी फाइल एक दफ्तर से दू[illegible] दफ्तर तक घूमती रही अगर पहले दिन ही लोग मिलकर पे[illegible] को नीचे से दबे आदमी को निकाल लेते तो उसकी मृत्यु न[illegible] होती।

व्याख्या- बार-बार कवि यही कहता रहता कि पहले मुझे पे[illegible] के नीचे से निकाल दो पर हर विभाग का सचिव फाइल [illegible] लेकर अनेक विभागों में घूमता रहा। एक दिन पाँच बजे सुपरिंटे[illegible] आदमी के पास आकर-बोला कि प्रधान ने पेड़ को काटने [illegible] आज्ञा दे दी है और इस घटना की सारी अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदा[illegible] अपने ऊपर ले ली है। कल पेड़ काट दिया जायेगा तब तुम इ[illegible] पीड़ा। से मुक्ती पा जाओगे।

(10) कभी ऐसा भी होता कि जब मैं किसी जलसे में पहुँचत[illegible] तो मेरा स्वागत "भारत माता की जय!" इस नारे से जोर [illegible] साथ किया जाता। मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता कि इ[illegible] नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है जिसकी वे जय चाहते हैं।

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठय-पुस्तक आरोह के पा[illegible] भारत माता से ली गई है। इसके लेखक स्वतंत्र भारत के प्रथ[illegible] प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू है।

प्रसंग- ब्रिटिश शासन से भारत को स्वतंत्र कराने के लि[illegible] भारत में स्थान-स्थान पर जन सभाएँ की जाती थी। जब नेहरू इन जनसभाओं में जाते थे तब लोग भारत माता की जय क[illegible] नारा लगाकर उनका स्वागत करते थे। यहाँ पर इस नारे का अ[illegible] बताया गया है।

व्याख्या- पं. नेहरू कह रहे है कि जिस सभा में भी वह जा[illegible] थे वहाँ की जनता उनका स्वागत भारत की जय के नारे से करती थी। नेहरूजी यह जानना चाहते थे कि इस नारे का क्या अर्थ है। इसलिए उन्होंने उन लोगों से उस नारे का अर्थ पूछा। साथ ही नेहरूजी ने किसानों से भारत माता का भी अर्थ पूछा और कहा आप भारत माता किसे कहते हो।